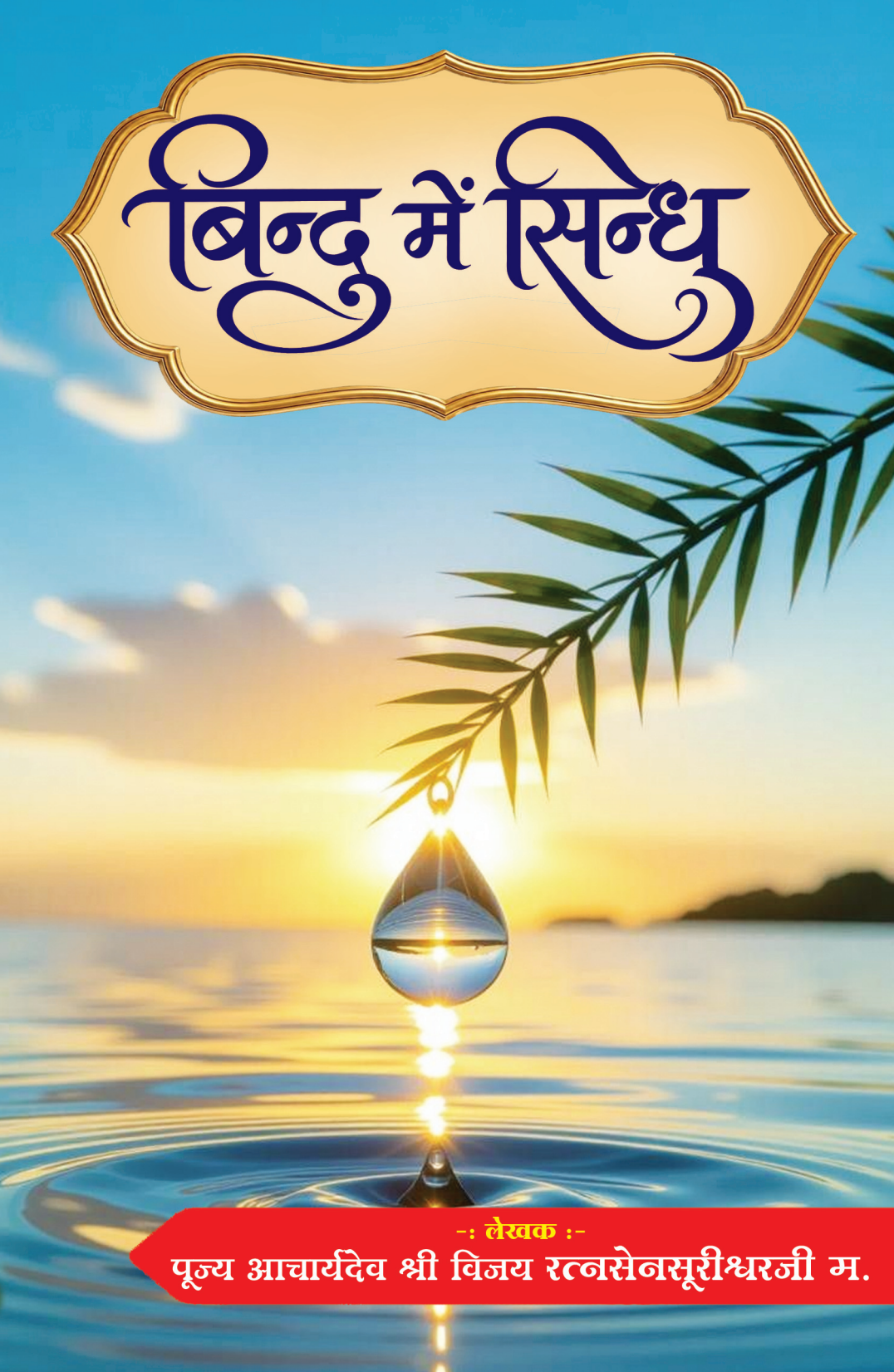
# बिन्दु में सिन्धु



-: लेखक :-
पूज्य आचार्यदेव श्री विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.

# बिन्दु में सिन्धु


**लेखक**

परम शासन प्रभावक, व्याख्यान वाचस्पति
दीक्षा युग प्रवर्तक पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय
**रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.** के तेजस्वी शिष्यरत्न बीसवीं सदी
के महान् योगी, भावाचार्य तुल्य पूज्यपाद पंन्यासप्रवर
**श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के
कृपापात्र चरम शिष्यरत्न, मरुधररत्न, गोड़वाड़ के गौरव,
सरस्वती नंदन, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**



**280**

**प्रकाशन**

**दिव्य सन्देश प्रकाशन**
**C/o. सुरेन्द्र जैन,** Office No. 304, 3rd Floor,
बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे,
डॉ.एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002.
Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

**आवृत्ति :** प्रथम • **मूल्य :** 170/- रुपये • **प्रतियाँ :** 925
**विमोचन तिथि :** 24-10-2026
**विमोचन स्थल :** प्रेमसूरि गुरु मंदिर, पिंडवाडा, (राज.)
• **Website :** divyasandesh.store

## आजीवन सदस्य योजना

**आजीवन सदस्यता शुल्क - 4000/- रु.**

• आप जैन धर्म के रहस्य, जैन इतिहास, जैन तत्त्वज्ञान, जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप **दिव्य संदेश प्रकाशन** मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य ***आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.*** सा. द्वारा लिखित उपलब्ध 7 पुस्तकें दी जाएंगी और **अर्हद् दिव्य संदेश** मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें (Open Book Exam साधु–साध्वी उपयोगी पुस्तकें एवं पुनः मुद्रित पुस्तकों को छोड़कर) घर बैठे प्राप्त होगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।

## प्राप्ति स्थान

**1. चेतन हसमुखलालजी मेहता**
बोरीवली, (M.S.)
M. 9867058940

**2. प्रवीण गुरुजी**
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

**3. प्रकाश बड़ोल्ला,**
52, 3rd Cross,
शंकरमट रोड, शंकरपुरा,
बैंगलोर-560 004.
M. 8971230600

---

***आजीवन सदस्यता शुल्क***
***Rs. 4000/- भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :***
**(1) दिव्य संदेश प्रकाशन**
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डिंग,
विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट,
कालबादेवी, मुंबई-400 002.
Mobile : 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

# प्रकाशक की कलम से...



नमस्कार महामंत्र के बेजोड साधक, चिंतक एवं अनुप्रेक्षक, **भावाचार्य तुल्य पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के कृपा पात्र चरम शिष्यरत्न गोडवाड के गौरव, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर सरस्वती-नंदन **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के संयम सुवर्ण वर्ष अनेकविध आराधना एवं जिनशासन की प्रभावना पूर्वक पूर्णाहूति की ओर गतिमान है ।

**जैन हिन्दी साहित्य जगत् में पूज्य आचार्य श्री एक तेजस्वी सितारे है, उनके वरद् हस्तों से प्रतिवर्ष जैन संघ को अनमोल तात्त्विक व सात्त्विक साहित्य की भेंट मिलती रही है ।**

हर वर्ष की तुलना में इस वर्ष पूज्यश्री के द्वारा आलेखित सर्वाधिक साहित्य को प्रकाशित करने का परम सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है ।

**हिन्दी साहित्य जगत् में पूज्यश्री की यह 280वीं पुस्तक है ।**

गुरु कृपा के बल से पूज्यश्री में दोनों विशेषताएं है, वे कुशल प्रवचनकार है और श्रेष्ठ लेखक भी ।

**जैन धर्म के अनेकविध विषयों पर उनकी धारा प्रवाही कलम से अनमोल साहित्य का सर्जन हुआ है ।**

जैन जगत् में उनका साहित्य खूब चाव से पढा जाता है ।

**जिन वाणी की अमीवर्षा करते समय उनके मुख कमल में निकले मे प्रवचन बिंदु सच मायने में बिंदु में सिंधु का ही काम कर रहे है ।**

पूज्यश्री के स्वर्णिम वर्ष के इस चातुर्मास दरम्यान पूज्य श्री की तारक निश्रा में पिंडवाडा नगर में अनेकविध आराधना-अनुष्ठान तो संपन्न हुए ही हैं, इसके साथ ही चातुर्मास दरम्यान छह पुस्तकों का प्रकाशन भी हुआ है ।

**आसो मास की नवपद ओली में ज्ञानपद की आराधना के पवित्र दिन इस पुस्तक का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है ।**

नवपदओली के लाभार्थी परिवार ने खूब उदारता के साथ यह ओली करवायी है तो इस पुस्तक के प्रकाशन में भी लाभ लेकर अपनी नश्वर संपत्ति का सद्व्यय किया है, इस हेतु वे भी खूब धन्यवाद के पात्र है ।

**हमें पूर्ण विश्वास हैं कि बिंदु में सिंधु तुल्य ये प्रवचन मोती अनेक आत्माओं की सुषुप्त चेतना को जागृत किए बिना नहीं रहेंगे ।**

# लेखक की कलम से...

तारक तीर्थंकर परमात्मा जगत् के जीवों के कल्याण के लिए प्रतिदिन दो-दो प्रहर तक धर्म देशना के माध्यम से जगत् के जीवों पर महान् उपकार करते है ।

**भूखें को भोजन देने से**
**प्यासे को पानी पिलाने से**
**वस्त्र रहित को वस्त्र देने से**
**निर्धन को धन देने से**
**रोगी को दवाई देने से**

जो उपकार होता है, वह तो
समस्या का Temporary समाधान होता है,
समस्या का Permanent समाधान नहीं है ।
तारक तीर्थंकर परमात्मा
धर्मदेशना के माध्यम से
**'मोक्ष मार्ग'** का निरुपण कर

**सदा काल के लिए**
**भूख, प्यास, रोग, शोक, वियोग,**
**ठंडी-गर्मी आदि समस्याओं का**
**अंत ही ला देते है ।**
**अतः उनका उपकार असीम कहलाता है ।**

ऐसे प्रभु के अनमोल वचनों का
वितरीत करने का सुंदर अवसर
प्रवचन के माध्यम से
मुझे प्राप्त हुआ । प्रभु के ये वचन तो
गागर में सागर की भांति है अथवा
बिंदु में सिंधु के समान है ।

**चातुर्मास दरम्यान हुए प्रवचनों का सुंदर अवतरण**
***मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.* ने किया था ।**
**उन अवतरणों को पुनः संस्कारित किया ।**
**आज वे ही प्रभु के वचन *'बिंदु में सिंधु'* के**
**माध्यम से पाठकों के करकमलों में आ रहे है ।**

इनमें आत्म-जागृति का संदेश है ।
मोह की गाढ निद्रा को दूर करने के लिए
ये वचन प्रचंड **'घंटनाद'** समान है ।
शांति की पलों में इन प्रवचन-बिंदुओं का धीरे धीरे
आस्वाद लेने से जीवन में बहुत कुछ लाभ पा सकते है ।

**इन प्रभु वचनों का पान कर**
**सभी आत्माएं मोह के विष से सदा मुक्त**
**बनकर शाश्वत सुख की भोक्ता बने ।**
**इसी शुभकामना के साथ...**

**प्रेमसूरि गुरु मंदिर**
आराधना भवन,
पिंडवाडा (राज.)
दि. 17-9-2026

**-आचार्य रत्नसेनसूरि**

Introduction

# लेखक का संक्षिप्त-जीवन परिचय

| | |
|---|---|
| **गृहस्थ नाम** | : राजु (राजमल चोपड़ा) |
| **माता का नाम** | : चंपाबाई |
| **पिता का नाम** | : छगनराजजी गेनमलजी चोपड़ा |
| **जन्मभूमि** | : बाली (राज.) |
| **जन्म तिथि** | : भादो सुद-3, संवत् 2014 दि. 16-9-1958 |
| **बचपन में धार्मिक अभ्यास** | : पंच प्रतिक्रमण-नवस्मरण आदि |
| **ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार** | : 18 जून 1974 |
| **व्यावहारिक अभ्यास** | : 1st year B.Com. (पार्श्वनाथ उम्मेद कॉलेज फालना-राज.) |
| **दीक्षा दाता** | : पू.पं. श्री हर्षविजयजी गणिवर्य |
| **गुरुदेव** | : अध्यात्मयोगी पू. पंन्यास **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** |
| **दीक्षा दिन** | : माघ शुक्ला 13, संवत् 2033 दि. 2-2-1977 |
| **समुदाय** | : शासन प्रभावक पू.आ. **श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** |
| **दीक्षा दिन विशेषता** | : भारत भर में लगभग 50 ऊपर दीक्षाएँ |
| **108 मुमुक्षु वरघोड़ा** | : 9 जनवरी 1977, मुंबई |
| **दीक्षा स्थल** | : न्याति नोहरा-बाली राज. |
| **दीक्षा समय उम्र** | : 18 वर्ष 5 मास |
| **बड़ी दीक्षा** | : फाल्गुन शुक्ला 12, संवत् 2033, दि. 1-3-1977 |
| **बड़ी दीक्षा स्थल** | : घाणेराव (राज.) |
| **प्रथम चातुर्मास** | : संवत् 2033 पाटण पू.पं. श्री हर्षविजयजी के सान्निध्य में । |

- **अभ्यास :** प्रकरण, भाष्य, 6 कर्मग्रंथ, कम्मपयडी, पंचसंग्रह, न्याय, काव्य, कोश, संस्कृत-प्राकृत व्याकरण, संस्कृत-प्राकृत साहित्य वाचन, ज्योतिष, आगम वाचन आदि ।
- **भाषा बोध :** हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी आदि ।
- **प्रथम प्रवचन प्रारंभ :** फागुन सुदी 14, वि.संवत् 2034 पाटण (गुजरात) ।
- **चातुर्मासिक प्रवचन प्रारंभ :** बाली वि.संवत् 2038 ।

- **विहार क्षेत्र :** राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्णाटक, तामिलनाडू ।
- **चातुर्मास :** राजस्थान में 12, गुजरात में 11, मध्यप्रदेश में 1, महाराष्ट्र में 21, कर्णाटक में 3, तामिलनाडु में 2 ।
- **पादविहार :** लगभग 49,000 कि.मी. ।
- **अंजन शलाका एवं प्रतिष्ठायें :** जयपुर (राज.) में शिखरबद्ध मंदिर की प्रतिष्ठा, मंड्या (कर्णाटक), वलवण, कामसेट, भायंदर (महा.) राजपुरा, भोपाल सागर, दयालशा किल्ला (राजसमंद), भारुंदा (राज.) आदि में अंजनशलाका प्रतिष्ठा, बेंगलोर में 3 गृह जिनालय, पूना तथा कोयम्बत्तुर में एक-एक गृह जिनालय ।
- **(छ'री पालित संघ में मार्गदर्शन-प्रवचन) :** बरलूट से शत्रुंजय, गोदन से जैसलमेर, वल्लभीपुर से पालीताणा, लुणावा से राणकपुर पंचतीर्थी ।
- **छ'री पालक निश्रादाता :** 1. उदयपुर से केशरियाजी, 2. गिरधरनगर से शंखेश्वर, 3. धूलिया से नेर, 4. कराड़ से कुंभोज, 5. सोलापुर से बार्शी, 6. भिवंडी से महावीर धाम, 7. कर्जत से मानस मंदिर, 8. हस्तगिरि से शत्रुंजय होकर गिरनार, 9. शत्रुंजय बारह गाऊ, 10. सेवाडी से राणकपुर पंचतीर्थी, 11. बेंगलोर से सुशीलधाम, 12. कोयम्बत्तूर से अव्वलपुंदरी, 13. उदयपुर से दयालशा किल्ला ।
- **प्रथम पुस्तक आलेखन :** **''वात्सल्य के महासागर''** वि.सं.संवत् 2038 ।
- **अद्यावधि प्रकाशित पुस्तकें :** 281 ।
- **शिष्य-प्रशिष्य : स्व.मु. श्री उदयरत्नविजयजी म., स्व.मुनि श्री केवलरत्नविजयजी म., स्व.मुनि श्री कीर्तिरत्नविजयजी म., मुनि श्री प्रशांतरत्नविजयजी म., मुनि श्री शालिभद्रविजयजी म., मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी म., स्व. मुनि श्री यशोभद्रविजयजी म., मुनि श्री विमलपुण्यविजयजी म., मुनि श्री निर्वाणभद्रविजयजी म. मुनि श्री पुण्यबलविजयजी म.**
- **उपधान निश्रा दाता :** कुर्ला, धुले, येरवडा, आदीश्वर धाम (दो), कर्जत, विक्रोली, मोहना, पालीताणा (दो बार), सेसली, कीर्तिस्तंभ (घाणेराव), नासिक, सुशीलधाम (बेंगलोर), मैसूर, महावीर धाम (मुंबई), लोढा धाम, सुखधाम (राज.), महावीर जैन विद्यालय-उदयपुर ।
- **गणि पदवी :** वैशाख वदी-6, विक्रम संवत् 2055, दि.7-5-1999 चिंचवड गाँव, पूना ।
- **पंन्यास पदवी :** कार्तिक वदी-5, विक्रम संवत् 2061, दि.2-12-2004 श्रीपालनगर, मुंबई ।
- **आचार्य पदवी :** पोष वदी-1, विक्रम संवत् 2067, दि. 20-1-2011 थाणा ।

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा आलेखित हिन्दी साहित्य

| नं. | पुस्तक नाम | प्रकाशन विक्रम सं. | विषय | विमोचन स्थल |
|---|---|---|---|---|
| 1. | वात्सल्य के महासागर | 2038 | अध्यात्मयोगी पू. गुरुदेव का जीवन परिचय | बाली |
| 2. | सामायिक सूत्र विवेचना | 2039 | सामायिक सूत्रों का विवेचन | |
| 3. | चैत्यवंदन सूत्र विवेचना | 2040 | चैत्यवंदन के सूत्रों का विवेचन | |
| 4. | आलोचना सूत्र विवेचना | 2040 | इच्छामिठामि आदि सूत्रों का विवेचन | |
| 5. | श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र विवेचन | 2041 | वंदित्तु सूत्र पर विस्तृत विवेचन | |
| 6. | कर्मन् की गत न्यारी | 2041 | महाबल-मलयासुंदरी का चरित्र | पूना |
| 7. | आनंदघन चौबीसी विवेचन | 2041 | पू.आनंदघनजी के 24 स्तवनों का विवेचन | विजयापूर |
| 8. | मानवता तब महक उठेगी | 2041 | मार्गानुसारिता के 18 गुणों का विवेचन | |
| 9. | मानवता के दीप जलाएं | 2043 | मार्गानुसारिता के 17 गुणों का विवेचन | |
| 10. | जिंदगी जिंदादिली का नाम है | 2044 | पू.पादलिप्तसूरिजी आदि चरित्र | कैलाश नगर राज. |
| 11. | चेतन ! मोहनींद अब त्यागो | 2044 | 'चेतन ज्ञान अजुवालिए' पर विवेचन | रानीगांव |
| 12. | युवानो ! जागो | 2045 | धुम्रपान आदि पर विवेचन | रानीगांव |
| 13. | शांत सुधारस-विवेचन भाग 1 | 2045 | 8 भावनाओं पर विवेचन | पाली |
| 14. | शांत सुधारस- विवेचन भाग 2 | 2045 | 8 भावनाओं पर विवेचन | पाली |
| 15. | रिमझिम रिमझिम अमृत बरसे | 2045 | लेखों का संग्रह | जयपुर |
| 16. | मृत्यु की मंगल यात्रा | 2046 | 'मृत्यु' विषयक पत्रों का संग्रह | सेवाडी |
| 17. | जीवन की मंगल यात्रा | 2046 | जीवन की सफलता के उपाय | पिंडवाडा |
| 18. | महाभारत और हमारी संस्कृति-1 | 2046 | महाभारत पर जाहिर-प्रवचन | जयपुर |
| 19. | महाभारत और हमारी संस्कृति-2 | 2046 | महाभारत पर जाहिर-प्रवचन | पिंडवाडा |
| 20. | तब चमक उठेगी युवा पीढी | 2047 | नव युवकों को मार्गदर्शन | पिंडवाडा |
| 21. | The Light of Humanity | 2047 | मार्गानुसारिता के गुणों का वर्णन | उदयपुर |
| 22. | अंखियाँ प्रभु दर्शन की प्यासी | 2047 | पू.यशो.वि. की चौबीसी पर विवेचन | शंखेश्वर |
| 23. | युवा चेतना विशेषांक | 2047 | व्यसनादि पर लेखों का संग्रह | उदयपुर |
| 24. | तब आंसू भी मोती बन जाते है | 2047 | सागरदत्त चरित्र | उदयपुर |
| 25. | शीतल नहीं छाया रे (गुज.) | 2047 | गुजराती वार्ताओं का संग्रह | |
| 26. | युवा संदेश | 2048 | नवयुवकों को शुभ संदेश | पाटण |
| 27. | रामायण में संस्कृति भाग 1 | 2048 | रतलाम में दिए जाहिर-प्रवचन | राजकोट |
| 28. | रामायण में संस्कृति-भाग 2 | 2048 | रतलाम में दिए जाहिर-प्रवचन | जामनगर |
| 29. | श्रावक जीवन दर्शन | 2049 | श्राद्धविधि ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद | गिरधरनगर |
| 30. | जीवन निर्माण विशेषांक | 2049 | सद्गुणोपासना संबंधी लेख | जामनगर |

| नं. | पुस्तक नाम | प्रकाशन विक्रम सं. | विषय | विमोचन स्थल |
|---|---|---|---|---|
| 31. | The Message for the youth | 2049 | युवा संदेश का अंग्रेजी अनुवाद | गिरधरनगर |
| 32. | यौवन सुरक्षा विशेषांक | 2049 | ब्रह्मचर्य विषयक लेखों का संग्रह | गिरधरनगर |
| 33. | आनंद की शोध | 2050 | 5 जाहिर प्रवचन | गिरधरनगर |
| 34. | आग और पानी भाग-1 | 2050 | समरादित्य चरित्र कथा | माटुंगा |
| 35. | आग और पानी भाग-2 | 2050 | समरादित्य चरित्र कथा | माटुंगा |
| 36. | शत्रुंजय यात्रा (तृतीय आवृत्ति) | 2068 | शत्रुंजय महिमा एवं यात्रा विधि | पालीताणा |
| 37. | सवाल आपके, जवाब हमारे | 2050 | जैन धर्म विषयक प्रश्नोत्तरी | माटुंगा |
| 38. | जैन विज्ञान | 2050 | नव तत्व के पदार्थों पर विवेचन | थाणा |
| 39. | आहार विज्ञान विशेषांक | 2050 | जैन आहार पद्धति | थाणा |
| 40. | How to live true life ? | 2050 | जीवन की मंगल यात्रा का अनुवाद | थाणा |
| 41. | भक्ति से मुक्ति | 2050 | प्रभु भक्ति के स्तवन आदि | थाणा |
| 42. | आओ ! प्रतिक्रमण करे | 2051 | राई व देवसी आदि प्रतिक्रमण | थाणा |
| 43. | प्रिय कहानियाँ | 2051 | कहानियों का संग्रह | मुलुंड |
| 44. | अध्यात्मयोगी पूज्य गुरुदेव | 2051 | पं. श्री के जीवन विषयक लेख | भायखला |
| 45. | आओ ! श्रावक बने | 2051 | श्रावक के 12 व्रतों का निर्देश | कल्याण |
| 46. | गौतमस्वामी-जंबुस्वामी | 2051 | महापुरुषों का विस्तृत जीवन | कल्याण |
| 47. | जैनाचार विशेषांक | 2051 | जैन आचार विषयक लेख | कल्याण |
| 48. | हंसश्राद्धव्रत दीपिका (गु.) | 2051 | श्रावक के 12 व्रत | कल्याण |
| 49. | कर्म को नहीं शर्म | 2052 | भीमसेन चरित्र | कुर्ला |
| 50. | मनोहर कहानियाँ | 2052 | प्रेरणादायी 90 कहानियाँ | कुर्ला |
| 51. | मृत्यु-महोत्सव | 2052 | मृत्यु पर विवेचन | दादर |
| 52. | Chaitya-Vandan Sootra | 2052 | नवकार | |
| 53. | श्रावक का गुण सौन्दर्य | 2052 | श्रावक के 21 गुणों पर विवेचन | दादर |
| 54. | श्रमणाचार विशेषांक | 2052 | साधु जीवनचर्या विषयक | |
| 55. | विविध देववंदन | 2052 | दीपावली आदि देववंदन | भायंदर |
| 56. | नवपद-प्रवचन | 2052 | नवपद के प्रवचन | चीराबाजार |
| 57. | ऐतिहासिक कहानियाँ | 2052 | भरत आदि 19 महापुरुष | सायन |
| 58. | तेजस्वी सितारे | 2053 | स्थूलभद्र आदि छ महापुरुष | सायन |
| 59. | सन्नारी विशेषांक | 2053 | सन्नारी विषयक लेख संग्रह | सायन |
| 60. | मिच्छामि दुक्कडम् | 2053 | क्षमापना पर उपदेश | सायन |
| 61. | Panch Pratikraman Sootra | 2053 | पंच प्रतिक्रमण मूल सूत्र | सायन |
| 62. | जीवन ने जीवी तूं जाण (गुज.) | 2053 | श्रद्धांजलि लेखों का संग्रह | सायन |
| 63. | आवो ! वार्ता कहुं (गुज.) | 2053 | विविध वार्ताओं का संग्रह | सायन |
| 64. | अमृत की बुंदे | 2054 | प्रेरणादायी उपदेश | बांद्रा (ई) |
| 65. | श्रीपाल-मयणा | 2054 | श्रीपाल और मयणा सुंदरी | थाणा |
| 66. | शंका और समाधान-भाग-1 | 2054 | 1200 प्रश्नों के जवाब | थाणा |

| नं. | पुस्तक नाम | प्रकाशन विक्रम सं. | विषय | विमोचन स्थल |
|---|---|---|---|---|
| 67. | प्रवचन धारा | 2054 | पांच जाहिर प्रवचन | धूले |
| 68. | धरती तीरथ'री विशेषांक | 2054 | राजस्थान के तीर्थ | धूले |
| 69. | क्षमापना | 2054 | क्षमापना संबंधी चिंतन | धूले |
| 70. | भगवान महावीर | 2054 | महावीर प्रभु के 27 भव | धूले |
| 71. | आओ ! पौषध करें | 2055 | पौषध की विधि | चिंचवड |
| 72. | प्रवचन मोती | 2054 | उपदेशात्मक वचन | चिंचवड |
| 73. | प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह | 2055 | चैत्यवंदन-स्तुति संग्रह | चिंचवड |
| 74. | श्रावक कर्तव्य भाग 1 | 2055 | श्रावक के 18 कर्तव्यों पर विवेचन | कराड |
| 75. | श्रावक कर्तव्य भाग 2 | 2055 | श्रावक के 18 कर्तव्यों पर विवेचन | कराड |
| 76. | कर्म नचाए नाच | 2056 | महासती तरंगवती चरित्र | सोलापूर |
| 77. | माता-पिता | 2056 | संतानों के कर्तव्य | सोलापूर |
| 78. | प्रवचन-रत्न | 2056 | प्रवचनों का आंशिक अवतरण | पूना |
| 79. | आओ ! तत्वज्ञान सीखे ! | 2056 | जैन तत्वज्ञान के रहस्य | चिंचवड स्टे. |
| 80. | क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद | 2056 | क्रोध के कटु परिणाम | चिंचवड स्टे. |
| 81. | जिन शासन के ज्योतिर्धर | 2057 | प्रभावक महापुरुष | चिंचवड गांव |
| 82. | आहार क्यों और कैसे ? | 2057 | आहार संबंधी जानकारी | दहीसर |
| 83. | महावीर प्रभु का सचित्र जीवन | 2057 | सचित्र संपूर्ण जीवन | थाणा |
| 84. | प्रभु दर्शन सुख संपदा | 2057 | प्रभु दर्शन पूजन विधि | भिवंडी |
| 85. | भाव श्रावक | 2057 | भाव श्रावक के 17 गुणों पर विवेचन | भायंदर |
| 86. | महान् ज्योतिर्धर | 2057 | रामचंद्रसूरीश्वरजी का जीवन | भायंदर |
| 87. | संतोषी नर सदा सुखी | 2058 | लोभ के कटु परिणाम | गोरेगांव |
| 88. | आओ ! पूजा पढाए ! | 2058 | चोसठ प्रकारी पूजाओं के अर्थ | गोरेगांव |
| 89. | शत्रुंजय की गौरव गाथा | 2058 | शत्रुंजय के 16 उद्धार | भायंदर |
| 90. | चिंतन मोती | 2058 | विविध चिंतनों का संग्रह | टिंबर मार्केट-पूना |
| 91. | प्रेरक कहानियाँ | 2058 | प्रेरणादायी कहानियाँ व नाटक | पूना |
| 92. | आई वडिलांचे उपकार | 2058 | 'माता-पिता' का मराठी अनुवाद | पूना |
| 93. | महासतियों का जीवन संदेश | 2059 | सुलसा आदि के चरित्र | देहुरोड |
| 94. | श्रीमद् आनंदघनजी पद विवेचन | 2059 | आनंदघनजी के 18 पदों पर विवेचन | पूना |
| 95. | Duties towards Parents | 2059 | माता-पिता का अंग्रेजी | पूना |
| 96. | चौदह गुणस्थान | 2059 | 'गुणस्थानक क्रमारोह विवेचन | येरवडा |
| 97. | पर्युषण अष्टाह्निक प्रवचन | 2059 | पर्युषणपर्व के प्रवचन | येरवडा |
| 98. | मधुर कहानियाँ | 2059 | कुमारपाल आदि का चरित्र | येरवडा |
| 99. | पारस प्यारो लागे | 2060 | पार्श्व प्रभु के 10 भव आदि | येरवडा |
| 100. | बीसवीं सदी के महान् योगी | 2060 | पूं.पं.श्री भद्रंकरविजयजी स्मृति ग्रंथ | दीपक ज्योतिटॉवर |
| 101. | अमर-वाणी | 2060 | पूं.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. के प्रेरक प्रवचन | दीपक ज्योतिटॉवर |

| नं. | पुस्तक नाम | प्रकाशन विक्रम सं. | विषय | विमोचन स्थल |
|---|---|---|---|---|
| 102. | पहला कर्मग्रंथ | 2060 | 'कर्म विपाक' पर विवेचन | दीपक ज्योतिटॉवर |
| 103. | प्रवचन के बिखरे फूल | 2061 | प्रवचन के सारभूत अवतरण | बोरीवली (ई) |
| 104. | कल्पसूत्र के हिन्दी प्रवचन | 2061 | कल्पसूत्र पर दिए प्रवचन | थाणा |
| 105. | आदिनाथ शांतिनाथ चरित्र | 2061 | प्रभु के भवों का वर्णन | थाणा |
| 106. | ब्रह्मचर्य | 2061 | ब्रह्मचर्य पर विवेचन | श्रीपालनगर, मुंबई |
| 107. | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-1) | 2061 | सामायिक सूत्रों पर विवेचन | श्रीपालनगर, मुंबई |
| 108. | राग म्हणजे आग (मराठी) | 2061 | 'क्रोध आबाद' का मराठी | श्रीपालनगर, मुंबई |
| 109. | आओ ! उपधान-पौषध करे | 2062 | उपधान संबंधी विस्तृत जानकारी | भिवंडी |
| 110. | प्रभो ! मन मंदिर पधारो | 2062 | प्रभु भक्ति विषयक चिंतन | आदीश्वर धाम |
| 111. | सरस कहानियाँ | 2062 | नल-दमयंती आदि कहानियाँ | परेल मुंबई |
| 112. | महावीर वाणी | 2062 | आगमोक्त सूक्तियों पर विवेचन | कर्जत |
| 113. | सद्गुरु-उपासना | 2062 | सद्गुरु का स्वरुप | कर्जत |
| 114. | चिंतन रत्न | 2062 | विविध चिंतन | कर्जत |
| 115. | जैन पर्व-प्रवचन | 2063 | कार्तिक पूनम आदि पर्वों के प्रवचन | कर्जत |
| 116. | नींव के पत्थर | 2063 | अध्यात्म प्राप्ति के 15 गुण | आदीश्वर धाम |
| 117. | विखुरलेले प्रवचन मोती | 2063 | प्रवचन के बिखरे फूल का मराठी | वणी |
| 118. | शंका समाधान भाग-2 | 2063 | 1200 प्रश्नों के जवाब | आदीश्वर धाम |
| 119. | श्रमण शिल्पी प्रेमसूरीश्वरजी | 2063 | पूज्यश्री का संक्षिप्त जीवन | भायंदर |
| 120. | पंच-प्रतिक्रमण (भाग-2) | 2063 | जग चिंतामणि से सूत्रों पर विवेचन | भिवंडी |
| 121. | Youth will shine then | 2063 | 'तब चमक उठेगी' का अंग्रेजी अनुवाद | भिवंडी |
| 122. | नव तत्त्व-विवेचन | 2063 | 'नवतत्त्व' पर विवेचन | भिवंडी |
| 123. | जीव विचार विवेचन | 2063 | 'जीव विचार' पर विवेचन | भिवंडी |
| 124. | भव आलोचना | 2064 | श्रावक जीवन संबंधी आलोचना स्थल | |
| 125. | विविध पूजाएं | 2064 | नवपद, आदि पूजाओं का भावानुवाद | आदीश्वर धाम |
| 126. | गुणवान् बनो | 2064 | 18 पाप स्थानकों पर विवेचन | महावीर धाम |
| 127. | तीन-भाष्य | 2064 | तीन भाष्यों का विवेचन | आदीश्वर धाम |
| 128. | विविध तपमाला | 2064 | प्रचलित तपों की विधियां | डोंबिवली |
| 129. | महान् चरित्र | 2064 | पेथडशा आदि का जीवन | कल्याण |
| 130. | आओ ! भावयात्रा करे (भाग-1) | 2064 | शत्रुंजय आदि भाव यात्राएं | कल्याण |
| 131. | मंगल स्मरण | 2064 | नवस्मरण आदि संग्रह | कल्याण |
| 132. | पंच-प्रतिक्रमण भाग-3 | 2065 | वंदित्तु तक हिन्दी विवेचन | विक्रोली |
| 133. | पंच-प्रतिक्रमण भाग-4 | 2065 | आयरिय उवज्झाए से विवेचन | विक्रोली |
| 134. | श्रीपालरास और जीवन | 2065 | श्रीपाल मयणा का रास एवं जीवन | थाणा |
| 135. | दंडक विवेचन | 2065 | दंडक सूत्र पर हिन्दी विवेचन | कुर्ला |
| 136. | आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें | 2065 | संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि | भिवंडी |
| 137. | सुखी जीवन की चाबियाँ | 2066 | मार्गानुसारिता के 35 गुण (कमलदर्शन) | मुंबई |

| नं. | पुस्तक नाम | प्रकाशन विक्रम सं. | विषय | विमोचन स्थल |
|---|---|---|---|---|
| 138. | पांच प्रवचन | 2066 | पाँच जाहिर प्रवचन | मोहना |
| 139. | सज्झायों का स्वाध्याय | 2066 | सज्झायों का संग्रह | मोहना |
| 140. | वैराग्य शतक | 2066 | वैराग्य पोषक विवेचन | मलाड |
| 141. | गुणानुवाद | 2066 | 10 आचार्यों का जीवन परिचय | रोहा |
| 142. | सरल कहानियाँ | 2066 | प्रेरणादायी कथाएं | रोहा |
| 143. | सुख की खोज | 2066 | सुख संबंधी चिंतन | रोहा |
| 144. | आओ ! संस्कृत सीखें (भाग-1) | 2067 | सिद्धहैम प्रवेशिका-भाग-1 | थाणा |
| 145. | आओ ! संस्कृत सीखें (भाग-2) | 2067 | सिद्धहैम प्रवेशिका-भाग-2 | थाणा |
| 146. | आध्यात्मिक पत्र | 2067 | पू.पं.श्री भद्रंकरविजयजी म. के पत्र | थाणा |
| 147. | शंका और समाधान (भाग-3) | 2067 | छोटे मोटे 750 प्रश्नों के जवाब | थाणा |
| 148. | जीवन शणगार प्रवचन | 2067 | संस्कार शिबिर-रोहा के प्रवचन | धारावी |
| 149. | प्रात:स्मरणीय-महापुरुष भाग-1 | 2067 | महापुरुषों के चरित्र | भायंदर |
| 150. | प्रात:स्मरणीय-महापुरुष भाग-2 | 2067 | महापुरुषों के चरित्र | भायंदर |
| 151. | प्रात:स्मरणीय-महासतियाँ भाग-1 | 2067 | महासतियों के चरित्र | भायंदर |
| 152. | प्रात:स्मरणीय-महासतियाँ भाग-2 | 2067 | महासतियों के चरित्र | भायंदर |
| 153. | ध्यान साधना | 2068 | ध्यान शतक-आराधना धाम | हालार |
| 154. | श्रावक आचार दर्शक | 2068 | धर्म संग्रह का हिन्दी अनुवाद | राजकोट |
| 155. | अध्यात्माचा सुगंध (मराठी) | 2068 | नीव के पत्थर का मराठी अनुवाद | नासिक |
| 156. | इन्द्रिय पराजय शतक | 2068 | वैराग्य वर्धक | पालीताणा |
| 157. | जैन शब्द कोष | 2068 | शास्त्रिय शब्दों के अर्थ | पालीताणा |
| 158. | नया दिन-नया संदेश | 2069 | तिथि अनुसार दैनिक सुविचार | पालीताणा |
| 159. | तीर्थ यात्रा | 2069 | शत्रुंजय गिरनार तीर्थ महिमा | हस्तगिरि तीर्थ |
| 160. | महामंत्र की साधना | 2069 | चिन्तन | पिन्डवाडा |
| 161. | अजातशत्रु अणगार | 2069 | श्रद्धाजंली लेख | भद्रंकर नगर-लुणावा |
| 162. | प्रेरक प्रसंग | 2069 | कहानियां | बाली |
| 163. | The way of Metaphysical Life | 2069 | नीव के पत्थर का English अनुवाद | बाली |
| 164. | आओ ! प्राकृत सीखे भाग-1 | 2070 | प्राकृत प्रवेशिका | सेसली तीर्थ |
| 165. | आओ ! प्राकृत सीखे भाग-2 | 2070 | Guide Book | सेसली तीर्थ |
| 166. | आओ ! भाव यात्रा करे ! भाग-2 | 2070 | 68 तीर्थ भावयात्रा | बेडा तीर्थ |
| 167. | Pearls of Preaching | 2070 | प्रवचन मोती का अनुवाद | नाकोडा तीर्थ |
| 168. | नवकार चिंतन | 2070 | चिंतन | उदयपूर |
| 169. | आओ दुर्ध्यान छोडे ! भाग-1 | 2070 | 63 दुर्ध्यान विषय पर विवेचन | घाणेराव |
| 170. | आओ दुर्ध्यान छोडे ! भाग-2 | 2070 | 63 प्रकार के दुर्ध्यान विषय पर विवेचन | घाणेराव |
| 171. | परम तत्त्व की साधना भाग-1 | 2071 | चिन्तन | कीर्ति स्थंभ घाणेराव |
| 172. | रत्न संदेश भाग-1 | 2071 | दैनिक सुविचार | बाली |
| 173. | गागर मे सागर | 2071 | बाली तथा घाणेराव के प्रवचन अंश | पालीताणा |

| नं. | पुस्तक नाम | प्रकाशन विक्रम सं. | विषय | विमोचन स्थल |
|---|---|---|---|---|
| 174. | रत्न संदेश भाग-2 | 2071 | तारीख अनुसार दैनिक सुविचार | पालीताणा |
| 175. | My Parents | 2071 | माता-पिता का English अनुवाद | पालीताणा |
| 176. | श्रावकाचार प्रवचन-भाग-1 | 2071 | श्रावक कर्तव्य | पालीताणा |
| 177. | श्रावकाचार प्रवचन-भाग-2 | 2071 | श्रावक कर्तव्य | पालीताणा |
| 178. | परम तत्त्व की साधना भाग-2 | 2071 | पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन | पालीताणा |
| 179. | परम तत्त्व की साधना भाग-3 | 2071 | पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन | पालीताणा |
| 180. | बाली चातुर्मास विशेषांक | 2069 | बाली चातुर्मास | बाली |
| 181. | उपधान स्मृति विशेषांक | 2072 | पालीताणा में उपधान | पालीताणा |
| 182. | नवपद आराधना | 2072 | नवपद के 11 प्रवचन | लोढा धाम |
| 183. | आत्म उत्थान का मार्ग भाग-1 | 2072 | पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन | गुंदेचा गार्डन |
| 184. | हेमचंद्राचार्य और कुमारपाल | 2072 | जीवन चरित्र | डोंबिवली |
| 185. | आईचे वात्सल्य (मराठी) | 2072 | माता-पिता का मराठी अनुवाद | नासिक |
| 186. | आत्म उत्थान का मार्ग भाग-2 | 2072 | पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन | नासिक |
| 187. | जैन-संघ व्यवस्था | 2072 | देव द्रव्य आदि की व्यवस्था | नासिक |
| 188. | चौबीस तीर्थंकर चरित्र भाग-1 | 2074 | 1 से 16 तीर्थंकरों के चरित्र | नासिक |
| 189. | चौबीस तीर्थंकर चरित्र भाग-2 | 2074 | 17 से 24 तीर्थंकरों के चरित्र | नासिक |
| 190. | संस्मरण | 2073 | संयम जीवन के अनुभव | गोकाक |
| 191. | संबोह सित्तरि | 2073 | वैराग्य का अमृतकुंभ | गोकाक |
| 192. | विवेकी बनों ! | 2073 | विवेक गुण पर विवेचन | राणे बेन्नुर |
| 193. | आत्म उत्थान का मार्ग भाग-3 | 2073 | तत्त्व चिंतन | बेंगलोर |
| 194. | लघु संग्रहणी | 2073 | जैन भूगोल | बेंगलोर |
| 195. | समाधि मृत्यु | 2073 | मृत्यु समय समाधि के उपाय | बेंगलोर |
| 196. | दूसरा कर्मग्रंथ | 2073 | दूसरे कर्मग्रंथ का विवेचन | बेंगलोर |
| 197. | चौथा कर्मग्रंथ | 2073 | चौथे कर्मग्रंथ का विवेचन | बेंगलोर |
| 198. | आदर्श कहानियाँ | 2074 | प्रेरणादायी कहानियाँ | बेंगलोर |
| 199. | प्रवचन वर्षा | 2074 | प्रवचन के बिंदु | सुशीलधाम |
| 200. | अमृत रस का प्याला | 2074 | 199 पुस्तकों का सार | बेंगलोर |
| 201. | महान् योगी पुरुष | 2074 | पं. भद्रंकरविजयजी के जीवन प्रसंग | बेंगलोर |
| 202. | बारह चक्रवर्ती | 2074 | बारह चक्रवर्तियों का जीवन | मैसूर |
| 203. | प्रेरक प्रवचन | 2074 | प्रेरणादायी प्रवचन | मैसूर |
| 204. | पाँचवाँ-कर्मग्रंथ | 2075 | कर्मग्रंथ का विवेचन | मैसूर |
| 205. | छठा-कर्मग्रंथ | 2074 | हिन्दी में विवेचन | बेंगलोर |
| 206. | Celibacy | 2074 | ब्रह्मचर्य का अनुवाद | सेलम (T.N.) |
| 207. | मंत्राधिराज प्रवचन सार | 2074 | पू.भद्रंकर वि. के प्रवचनांश | ईरोड (T.N.) |
| 208. | श्रमण क्रिया के मुख्य सूत्र | 2075 | साधु जीवन के सूत्रों पर विवेचन | कोयम्बतूर |
| 209. | मोक्ष मार्ग के कदम | 2075 | मोक्ष मार्ग के 21 गुण | कोयम्बतूर |

| नं. | पुस्तक नाम | प्रकाशन विक्रम सं. | विषय | विमोचन स्थल |
|---|---|---|---|---|
| 210. | शंका समाधान भाग-4 | 2075 | मननीय प्रश्नों के जवाब | कोयम्बतूर |
| 211. | व्यसन-मुक्ति | 2076 | सात व्यसन के अनर्थ | चैनइ |
| 212. | गणधर-संवाद | 2076 | गौतम स्वामि आदि 11 गणधर प्रतिबोध कथा | चैनइ |
| 213. | New Message for a New Day | 2077 | सुवाक्य संकलन (अंग्रेजी) | चैनइ |
| 214. | चिंतन का अमृत-कुंभ | 2077 | पूज्यश्री का मार्मिक चिंतन | बेंगलोर |
| 215. | सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव-बलदेव | 2077 | चरित्र ग्रंथ | बेंगलोर |
| 216. | अचिंत्य चिंतामणि (भाग-1) | 2077 | नमस्कार महामंत्र की महिमा | बल्लारी (Kar.) |
| 217. | अचिंत्य चिंतामणि (भाग-2) | 2077 | नमस्कार महामंत्र की महिमा | बल्लारी (Kar.) |
| 218. | हार्दिक श्रद्धांजलि | 2077 | पंन्यासजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य आदि के जीवन चरित्र | बल्लारी (कर्णाटक) |
| 219. | सुखी जीवन के Mile-Stone | 2077 | प्रवचन बिन्दू | बीजापूर(Kar.) |
| 220. | महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा-1 | 2077 | महापुरुषों के चरित्र | बीजापूर(Kar.) |
| 221. | महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा-2 | 2077 | महापुरुषों के चरित्र | बीजापूर(Kar.) |
| 222. | महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा-3 | 2077 | महापुरुषों के चरित्र | बीजापूर(Kar.) |
| 223. | महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा-4 | 2078 | महापुरुषों के चरित्र | बीजापूर(Kar.) |
| 224. | अर्हद् दिव्य-संदेश (दीक्षा-विशेषांक) | 2078 | संयम जीवन की महत्ता एवं मु. विमलपुण्यविजयजी की दीक्षा प्रसंग | इचलकरंजी (M.S.) |
| 225. | 'बेंगलोर' प्रवचन-मोती | 2078 | बेंगलोर में हुए प्रवचन | कराड (M.S.) |
| 226. | श्री नमस्कार महामंत्र | 2078 | पू.पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन | बोरीवली (ई) |
| 227. | महामंत्र की अनुप्रेक्षाएँ | 2078 | पू.पं.श्री भद्रंकरवि. का चिंतन | भायंदर (W) |
| 228. | आठ कर्म निवारण पूजाएं | 2078 | 64 प्रकारी पूजा का विवेचन | भायंदर |
| 229. | तत्त्वार्थ-सूत्र (भाग-1) | 2078 | तत्त्वार्थ सूत्र का हिन्दी विवेचन | भायंदर |
| 230. | तत्त्वार्थ-सूत्र (भाग-2) | 2078 | तत्त्वार्थ सूत्र का हिन्दी विवेचन | भायंदर |
| 231. | वर्धमान सामायिक साधना श्रेणी | 2078 | सामायिक विधि एवं श्रेणी | भायंदर |
| 232. | वैराग्य-वाणी | 2079 | पू.आ.श्री रामचन्द्रसूरिजी के प्रवचन | भायंदर |
| 233. | सम्यग्दर्शन का सूर्योदय | 2079 | समकित 67 बोल विवेचन | महावीर धाम |
| 234. | मु.पुण्योदयवि. की जीवन झांकी | 2079 | मु. पुण्योदयविजयजी का परिचय | कामसेट |
| 235. | मन के जीते जीत है | 2079 | मन पर चिंतन | थाणा |
| 236. | नमस्कार मीमांसा | 2079 | नवकार चिंतन | भायंदर |
| 237. | परमेष्ठि-नमस्कार | 2079 | नवकार चिंतन | निगडी |
| 238. | धर्म बीज | 2079 | चार भावना चिंतन | निगडी |
| 239. | 45 आगम परिचय | 2079 | आगम बोध | निगडी |
| 240. | नित्य देव वंदन | 2080 | देव वंदन | लोढा धाम |
| 241. | श्री भद्रंकर प्रश्नोत्तरी | 2080 | शंका समाधान | बडगांव-राज. |
| 242. | अध्यात्मयोगी से प्रश्नोत्तर | 2080 | शंका समाधान | बडगांव-राज. |
| 243. | तीसरा कर्मग्रन्थ | 2080 | तीसरे कर्मग्रंथ का विवेचन | वीरवाडा-राज. |

| नं. | पुस्तक नाम | प्रकाशन विक्रम सं. | विषय | विमोचन स्थल |
|---|---|---|---|---|
| 244. | कोयंबत्तुर-प्रवचन | 2080 | प्रवचन साहित्य | पोसालिया -राज. |
| 245. | दक्षिण भारत प्रवचन | 2080 | प्रवचन साहित्य | पोसालिया-राज. |
| 246. | पाण्डव-चरित्रम् | 2080 | जैन महाभारत | पोसालिया-राज. |
| 247. | महावीर-प्रभु की अंतिम देशना | 2080 | उत्तराध्यय सूत्र के 36 अध्ययन | पोसालिया-राज. |
| 248. | योग की आठ दृष्टियाँ | 2080 | योग की आठ दृष्टियों का वर्णन | पोसालिया-राज. |
| 249. | साचा माणस बनीए ! (गुजराती) | 2081 | मार्गानुसारिता के 35 गुण | पोसालिया-राज. |
| 250. | शुभ-संदेश | 2081 | 365 संदेश | लुणावा-राज. |
| 251. | सहनशील बनों (22 परीषह) | 2081 | 22 परीषह विजय हेतु प्रेरणा | भोपाल सागर-राज. |
| 252. | नवपद आराधना विधि | 2081 | विधि-विधान | बडगांव-राज. |
| 253. | शत्रुंजय की भाव यात्रा | 2081 | शत्रुंजय महातीर्थ पर विस्तृत विवेचन | बडगांव-राज. |
| 254. | नवकार-प्रवचन | 2081 | पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी के प्रवचन | भद्रंकर नगर-राज. |
| 255. | 10 श्रमण-धर्म | 2081 | 10 यति धर्म पर विवेचन | उदयपुर-राज. |
| 256. | श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासन-1 | 2081 | संस्कृत-व्याकरण | उदयपुर-राज. |
| 257. | श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासन-2 | 2081 | संस्कृत-व्याकरण | उदयपुर-राज. |
| 258. | श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासन-3 | 2081 | संस्कृत-व्याकरण | उदयपुर-राज. |
| 259. | श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासन-4 | 2081 | संस्कृत-व्याकरण | उदयपुर-राज. |
| 260. | समाधि की साधना | 2082 | अमृतवेल सज्झाय पर विवेचन | उदयपुर-राज. |
| 261. | शंका-समाधान (भाग-5) | 2082 | 628 प्रश्नों के उत्तर | सादडी-राज. |
| 262. | प्रवचन का अमृत | 2082 | प्रवचन के सुवाक्य | घाणेराव-राज. |
| 263. | उपधान तप एवं तीर्थ यात्रा विशेषांक | 2082 | उपधान प्रतिक्रियाएँ | दयालशा किल्ला |
| 264. | पू.पं.जी महाराज के जीवन-प्रसंग | 2082 | पंन्यासजी म. के प्रेरक प्रसंग | बाली-राज. |
| 265. | श्रमण हितशिक्षा | 2082 | श्रमणों का हितशिक्षा | भारुंदा-राज. |
| 266. | अर्हद् दिव्य संदेश–वर्ष–2001 | | ईस्वी.सन् 2001 के 12 अंको की File | |
| 267. | अर्हद् दिव्य संदेश–वर्ष–2002 | | ईस्वी.सन् 2002 के 12 अंको की File | |
| 268. | अर्हद् दिव्य संदेश–वर्ष–2003 | | ईस्वी.सन् 2003 के 12 अंको की File | |
| 269. | अर्हद् दिव्य संदेश–वर्ष–2004 | | ईस्वी.सन् 2004 के 12 अंको की File | |
| 270. | अर्हद् दिव्य संदेश–वर्ष–2005 | | ईस्वी.सन् 2005 के 12 अंको की File | |
| 271. | हृदय प्रदीप (भाग-1) | 2082 | 18 श्लोकों का हिन्दी विवेचन | सुमेरपुर-राज. |
| 272. | हृदय प्रदीप (भाग-2) | 2082 | 18 श्लोकों का हिन्दी विवेचन | सुमेरपुर-राज. |
| 273. | हार्दिक भावांजलि | 2082 | अनेक आचार्य भगवंतो के गुणानुवाद | बडगांव-राज. |
| 274. | हालार-गौरव वज्रसेन-सौरभ | 2082 | पं. श्री वज्रसेनविजयजी जीवन प्रसंग | पाली-राज. |
| 275. | आओ भाव सामायिक करें | 2082 | सामायिक महिमा | मुण्डारा |
| 276. | चिंतन की चांदनी | 2082 | प्रवचन साहित्य | पिण्डवाडा |
| 277. | आओ ! संस्कृत सीखें भाग-3 | 2082 | संस्कृत व्याकरण | पिण्डवाडा |
| 278. | आओ ! संस्कृत सीखें Guide Book | 2082 | संस्कृत वाक्यों के अनुवाद | पिण्डवाडा |
| 279. | नवतत्त्व संग्रह | 2082 | विजयानंदसूरिजी की रचना | पिण्डवाडा |
| 280. | बिंदु से सिंधु | 2082 | प्रवचन के बिंदुओं का संग्रह | पिण्डवाडा |

- डॉक्टर के कहने से रोग के कारण घी-दूध या मिठाई छोडनेवाले को त्यागी नहीं कह सकते हैं, क्योंकि उसमें त्याग का राग नहीं हैं, बल्कि देह के राग का पोषण है ।
- शरीर की नहीं, जो आत्मा के कल्याण की चिंता करे, वह कल्याण मित्र कहलाता है ।
- प्रभु सर्वज्ञ है, अतः सब कुछ जानते है तथा वीतराग है अतः उन्हें झूठ बोलने का कोई प्रयोजन नहीं है, अतः प्रभु के वचनों पर हमें पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिए ।
- धर्म को धारण करने के लिए योग्यता और पात्रता जरुरी है ।

- जैन धर्म किसी व्यक्ति के नाम से निकला हुआ धर्म नहीं है, परंतु वीतराग और सर्वज्ञ का धर्म हैं ।
- कुश्ती खेलने के पहले दोनों खिलाडी परस्पर हाथ मिलाते है । शादी के समय हस्त मिलाप की क्रिया भी आज इस कुश्ती का रिहर्सल हो गयी है ।
- धन का सच्चा सदुपयोग सात क्षेत्र, जीवदया एवं अनुकंपा में दान है ।
- संघ की महिमा बताने में बृहस्पति भी सक्षम नहीं है ।

- उपधान और छ'री पालक संघ द्वारा संयम जीवन का प्रशिक्षण प्राप्त होता है ।
- मोहनीय कर्म के संपूर्ण क्षय से वीतराग बनी आत्मा ही केवलज्ञान पाकर सर्वज्ञ बनती है ।
- आत्मा को साक्षात् होनेवाला ज्ञान प्रत्यक्षज्ञान कहलाता है । अवधि, मनः पर्यव एवं केवलज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान कहलाते है ।
- कायोत्सर्ग में काया का त्याग नहीं है, किंतु काया के प्रति रही हुई ममता का त्याग है ।

- अपने जीवन को स्वर्ग और नरक हम ही बनाते है,
  जब हम
  परोपकार करते हैं, गुण दृष्टा बनते हैं
  क्षमाशील बनते है
  तब हम अपने मन को स्वर्ग बनाते है
  और जब
  क्रोध की आग में झूलसते है,
  स्वार्थी बनते हैं,
  दोषदृष्टा बनते हैं तो अपने जीवन को
  नरक बनाते है ।

❋ अपने जीवन को स्वर्ग बनानेवाला ही
मरकर स्वर्ग में जाता है और
अपने जीवन को नरक बनानेवाला ही
मरकर नरक में जाता है ।

❋ दुनियाँ में चार चीजे कभी तृप्त नहीं होती है–
आग, समुद्र, पेट और मानवीय मन !
आग ईंधन से तृप्त नहीं होती है,
समुद्र जल से तृप्त नहीं होता है
पेट भोजन से तृप्त नहीं होता है (रोज भोजन चाहिये)
चाहे जितना धन मिले मानवीय मन तृप्त नहीं होता है ।

❋ लडका सुधरेगा तो
अपने पिता का नाम रोशन करेगा
और लडकी सुधरेगी तो
दो कुल को उजाला देगी
इसलिए आज ज्यादा आवश्यकता हैं
लडकों से भी लडकियों के संस्कारों की ।

❋ प्रभु के दया-पात्र तो जगत् के सभी जीव है ।
परंतु प्रभु के कृपापात्र बनने के लिए तो
प्रबल-पुरुषार्थ की आवश्यकता है ।
जिनाज्ञा के प्रति जो पूर्ण-समर्पित हैं,
वेही आत्मा प्रभु की कृपा-पात्र बनने में समर्थ बनती है ।

❋ धन के पागलपन ने मनुष्य को
नई-नई बीमारियाँ भेंट दी है ।

**A - Heart Attack**
**B - B.P.**
**C - Cholestrol**
**D - Diabetes**

❋ भावदया का प्रारंभ भी
द्रव्यदया से ही होता है ।
भावदया लाने के लिए
द्रव्यदया जरुरी हैं ।

❋ मध्यस्थ के तीन लक्षण :–

1) सत्य-असत्य का स्पष्ट ख्याल न आए, तब तक किसी का पक्षपात न करें ।
2) सत्य की शोध में प्रयत्नशील हो ।
3) सत्य की प्रतीति हो जाने के बाद उसका पक्षपात न छोडे ।

❋ जिसे संसार असार लगा हो, उसी का प्रभुशासन में प्रवेश हुआ है ।

❋ अनुकंपा के पुण्य से स्वर्ग के सुख मिलते है परंतु गुण संपन्न (7 क्षेत्र) की भक्ति से तो मोक्ष मिलता है ।

❋ आधि : मानसिक वेदना ।
व्याधि : शारीरिक वेदना ।
उपाधि : सांयोगिक वेदना ।

❋ जीवदया के तीन हेतु :–

(1) दु:खी को देख दया न करे तो अपने परिणाम निष्ठुर बनते है ।
(2) जिनशासन की उन्नति होती है ।
(3) जिनशासन की निंदा न हो ।

❋ कालिक सूत्र पहले व चोथे प्रहर में पढे जाते है ।

❋ अक्सर लोग बोलते हैं–'धन हो तो धर्म हो सकता है ।'
परंतु यह बात बिल्कुल गलत है ।
धर्म धन से नहीं, बल्कि धन के त्याग से होता है ।
धन का त्याग करनेवाला ही दान कर सकता है ।
दान के लिए धन की नहीं, दिल की उदारता जरुरी है ।

❋ जो पैसों के करीब होते है,
वो गरीब होते है ।
अरे ! दिलवाले है वे लोग,
जो भगवान के करीब होते है ।

❋ सूर्य उदय के समय भी लाल होता है और
अपने अस्त के समय भी लाल होता है ।
सूर्य का संदेश हैं–''चाहे अनुकूलता मिले
या प्रतिकूलता''-सदैव प्रसन्न रहना सीखे ।

❋ रामायण सिर्फ पढने के लिए नहीं है ।
रामायण तो राममय बनने के लिए है ।
'राम' कौन बन सकता हैं ? 'रमते आत्मनि इति रामः'
जो आत्मा में रमण करे, वह राम बन सकता है ।
राम बनने के लिए देह का प्रेम घटाना होगा,
आत्मा का प्रेम बढाना होगा ।

❋ जीवन की हर सांस में दीक्षा की ही प्रीत है,
सांस की हर धडकन में दीक्षा का ही संगीत है,
झूमते हुए झुंड में दीक्षा का ही गीत है
संयम मार्ग में जानेवालों की हमेशा जीत ही जीत है ।

❋ बडा नाम किस काम का, जो किसी काम न आए,
सागर से नदी भली, जो सब की प्यास बुझाय ।

❋ बादल का स्थान ऊंचा क्यों ?
समुद्र का स्थान नीचा क्यों ?
इसका एक ही कारण हैं, सागर पानी इकट्ठा करता हैं
और बादल देता रहता है ।

- एक शब्द लाख अरमानों को लूट लेता है,
  एक कदम लाख सम्मानों को लूट लेता है,
  कुछ ऐसी ही चुभन होती है तीखे शूलो की
  एक दर्द लाख मुस्कानों को लूट लेता है ।

- पुण्योदय से प्राप्त सामग्री को भोगना, उसका नाम संसार ।
  पुण्योदय से प्राप्त सामग्री का ज्ञानपूर्वक त्याग करना
  उसका नाम संयम ।

- अकेले अपवाद को पकडने वाला अपरिणत,
  अकेले उत्सर्ग को पकडने वाला
  अतिपरिणत कहलाता है ।

- अति परिणत व अपरिणत का छेद उडाने वाले
  होने से छेदसूत्र कहलाते है ।

- प्रवचन :– प्रभु की वाणी,
  प्रवचन :– संघ
  प्रवचन :– द्वादशांगी
  प्रवचन :– शासन, आज्ञा ।

- चलती ट्रेन में सामायिक नहीं कर सकते हैं, एकासनादि भी
  नहीं कर सकते है ।

- शरीर के मल के चार द्वार हैं,
  श्वासोच्छ्वास, पसीना, मल, मूत्र ।
- सर्दी–पोषण के लिए, गर्मी–शोधन के लिए व
  चातुर्मास–तप के लिए है ।
- संसार का राग बढाए वह विकथा,
  संसार का राग घटाए वह धर्मकथा ।
- पुद्गल को केन्द्रित कर विषय–कषाय की प्रवृत्ति करे वह संसारी ।
  आत्मा को केन्द्रित कर जिनाज्ञानुसार प्रवृत्ति करे वह संयमी ।

## सच्चा शिक्षण

- शिक्षण का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए । शिक्षण की वृद्धि के बाद यदि संस्कार न बढे तो वह ज्ञान गधे की पीठ पर रहे भार जैसा ही है ।

- धनवान को देखने से कोई धनवान नहीं बनता, बलवान को देखने से कोई बलवान नहीं बनता परंतु दूसरों के दोष देखने से तो हम दोषवान (दोषी) अवश्य बनते हैं, अत: जीवन में से दोष दृष्टि को दूर कर गुण दृष्टि विकसित करने का प्रयत्न करना चाहिए ।

❋ सत्य के तीन प्रकार हैं –

1) आभासिक सत्य – रेगिस्तान की गर्म हवा (लू) में पानी की भ्रांति की तरह व्यक्ति सांसारिक पदार्थों में सुख की कल्पना करता है ।

2) व्यवहारिक सत्य – शरीर से कमजोर हो फिर भी 'भीम' नाम हो तो उस व्यक्ति को भीम ही कहते हैं ।

3) पारमार्थिक सत्य – आत्मा, परमात्मा आदि के स्वरुप का बोध पारमार्थिक सत्य है ।

❋ प्रकृति की उदारता कितनी हैं ? हम एक दिन में जितनी ऑक्सीजन लेते हैं, उससे गैस के तीन सिलेंडर भरे जा सकते है । जिसकी कीमत 2100 रु. होती है । एक मनुष्य एक वर्ष में 7,66,500 रु व 65 वर्ष की उम्र में 5 करोड की ऑक्सीजन ले लेता हैं फिर भी प्रकृति बदले में 1 रु. की भी अपेक्षा नहीं रखती है ।

❋ धन के बल, तन के बल व जन के बल Majority से भी अधिक कीमत आत्मबल की है । जिसके पास आत्मबल है, उसके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है ।

❋ पुत्र पाने के लिए माँ को नौ महीने की धीरज रखनी पडती है । किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए धैर्य रखना बहुत जरुरी है ।

❋ पैसे का दूसरा नाम 'अर्थ' है, परंतु वह अर्थ ही अनर्थ पैदा करता है ।
धन बढने से भाई-भाई का प्रेम घटता है, व्यक्ति व्यभिचार की ओर प्रेरित होता है ।

❋ मिठाई खाना आसान है परंतु उसे पचाना कठिन है । पाप त्याग के नियम को स्वीकार करना आसान है परंतु उसका पालन कठिन है ।

❋ सागर के प्रति झुकनेवाली नदी स्वयं सागर बन जाती है,
परमेष्ठी के प्रति झुकनेवाली आत्मा स्वयं परमेष्ठी बन जाती है ।

❋ पाप कर्म के उदय से डरे वह संसारी,
पाप कर्म के बंध से डरे वह संयमी ।

❋ मंदिर में दो प्रकार के दीपक होते है । एक अखंड दीपक और दूसरा चालू दीपक !

प्रत्येक उपासक का एक लक्ष्य होता है कि चालू दीपक भले ही बुझ जाय, परंतु अखंड दीपक बुझना नहीं चाहिए ।

- हिन्दुस्तान में जितने लोग आतंकवाद या भूखमरी से नहीं मरते हैं, उससे भी ज्यादा लोग रोड एक्सीडेंट से मरते हैं । प्रतिवर्ष 5 लाख लोग Accident से बेमौत मरते हैं ।
- धर्म कार्य में प्रेरणा करना तो दूर रहा, धर्म-कार्य में बाधक बनती हो, उसे धर्मपत्नी कैसे कह सकते हैं ? वह धर्मपत्नी नहीं कर्म पत्नी है ।
- अनाज व पानी के दुष्काल को अनाज व पानी को Import कर दूर कर सकते हैं, परंतु साधु महात्मा के दुष्काल को महाविदेह क्षेत्र में से Import करके दूर नहीं कर सकते हैं ।

- प्रभु के शासन में कुछ आत्माओं ने गर्भवती पत्नी को छोडकर भी दीक्षा ली हैं–
  1) प्रभवस्वामी के पट्टधर आचार्य शय्यंप्रभसूरिजी म.
  2) सुनंदा को छोडकर दीक्षा लेनेवाले धनगिरि मुनि ।
  3) पू.आ. श्री कुलचन्द्रसूरिजी म.
- छ'री पालक संघ में कभी एकासना के बदले संयोगवश परिस्थितिवश बियासने की छूट हो सकती हैं, परंतु उपधान में अपवाद से भी बियासने की छूट नहीं है ।
- अपूर्ण ज्ञानी ही अभिमान करता है ! जो पूर्ण है उन्हें अभिमान की आवश्यकता ही नहीं है ।

- दुनिया में दो प्रकार के संबंध होते है एक स्थायी और दूसरा अस्थायी ! Blood के संबंध स्थायी संबंध कहलाते है माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन, पति-पत्नी के संबंध स्थायी संबंध कहलाते है । व्यापारी-ग्राहक, ड्राइवर-मुसाफिर, डॉक्टर-दर्दी आदि के संबंध अस्थायी संबंध कहलाते है ।

- आर्य संस्कृति सिखाती है कि अखंड दीपक की भांति तुच्छ बातों को लेकर स्थायी संबंध टूटने नहीं चाहिए । कुछ सहन करना पडे तो सहन कर ले, परंतु उन संबंधों को जुडे रखना चाहिए ।

- आज दुर्भाग्य है कि धन, निजीस्वार्थ या थोडा सा अपमान या नासमझी जैसे नगण्य कारणों को लेकर वे संबंध टूटते जा रहे हैं, जिससे पारिवारिक समस्याएँ बढती जा रही है ।

## सुखी होने का मार्ग

- पेट को रखो नरम, पांव को रखो गरम, आंख में रखो शरम और जीभ पर रखों संयम ।

- पेट को नर्म रखने का अर्थ हैं- भूख से कम भोजन करना । जैन दर्शन के अनुसार उसे ऊनोदरी तप कहा गया है । जितनी भूख है, उससे कम भोजन करनेवाले को कभी डॉक्टर की शरण में जाना नहीं पडता है ।

## सज्जन-दुर्जन

- मीठा आम खा लेने के बाद भी कौआ तो कर्कश आवाज ही करता है और मिर्च खा लेने के बाद भी पोपट मीठा ही बोलता है ।
- सांप को दूध पिलाया जाय तो भी वह जहर में रुपांतरित होता है और गाय को घास खिलाया जाय तो भी वह दूध में बदल जाता है ।
- सामनेवाला कैसा भी व्यवहार करे, सज्जन और दुर्जन व्यक्ति अपना स्वभाव नहीं छोडते है ।

- दुर्जन पर उपकार किया जाय तो भी वह अपकार ही करता है और सज्जन पर अपकार किया जाय तो भी वह उपकार ही करता है ।
- पानी में तडपते हुए बिच्छु को बचाया जाय तो वह बचाने वाले को काटने का ही काम करता है, जबकि संत-सज्जन पुरुष डंक देनेवाले बिच्छु को भी बचाने का ही काम करते है ।
- तालाब में कीचड न हो तो आश्चर्य है, घर में कचरा न आए तो आश्चर्य है, शरीर में रोग कभी पैदा न हो तो आश्चर्य है । उसी प्रकार जीवन में समस्याएं न हो तो आश्चर्य है ।

- जिस प्रकार तालाब जल का स्वीकार करता है तो उसके साथ कीचड का भी स्वीकार करता ही है, अत: अपने जीवन में आनेवाली समस्याओं को भी सहर्ष स्वीकार करना ही चाहिए ।
- आज दुनियाँ में जितने पाप बढ रहे हैं, उन सब का मूल नास्तिकता ही है । आत्मा, परलोक, पुण्य-पाप और परमात्मा का विस्मरण ही जीवन में सभी पापों का प्रवेश द्वार है ।
- जीवन में परलोक की श्रद्धा नष्ट हो जाने से पापों को खूब बढावा मिल गया है ।

## सज्जन के वचन

- वात फरे, बादल फरे, फरे नदीना पूर ।
  शूरा बोल्या ना फरे, भले पश्चिम ऊगे सूर ।।
- वायु का प्रवाह हमेशा बदलता है । कभी पूर्व का पवन तो कभी पश्चिम का पवन ।
- पवन के प्रवाह के अनुसार बादल की दिशा भी बदलती रहती है ।
- कभी-कभी नदी का प्रवाह भी इधर-उधर हो जाता है परंतु सूर्य की भांति सज्जन पुरुष के वचन कभी बदलते नहीं है ।

- सज्जन पुरुष के वचन तो पत्थर की लकीर की भांति होते है । जबकि दुर्जन पुरुष के वचन पानी की लकीर की तरह होते हैं, जो तुरंत ही बदल जाते है ।
- दशरथ की सज्जनता देखिए-कैकेयी ने राम के बदले भरत के राज्य की मांग कर ली । दशरथ के लिए विकट समस्या खडी हो गई फिर भी वे बदले नहीं ।
- योग्य व्यक्ति को योग्य अधिकार मिलते ही है । जीवन में योग्यता विकसित करने के लिए अपना प्रयत्न होना चाहिए ।
- योग्यता प्राप्त होगी तो अधिकार तो स्वतः मिलने वाले है ।

- आज दुर्भाग्य है कि व्यक्ति अपनी योग्यता बढाने के बजाय अपने अधिकार पाने के लिए लड रहा है ।
- योग्यता प्राप्त किए बिना आज जो सत्ताधीश बने हैं उनसे देश को भयंकर नुकसान ही हुआ है ।
- योग्यता बिना बालक के हाथ में छुरी आ जाय तो वह नुकसान का ही कारण बनती है ।
- 'जे अ अइया सिद्धा...' – पद द्वारा द्रव्य निक्षेपा से प्रभु की भक्ति है ।
  नमुत्थुणं सूत्र द्वारा भाव निक्षेपा से प्रभुजी भक्ति है ।

- जो बगुला मछली ही खाता हैं, उसके आगे मोतियों का ढेर कर दोंगे तो भी वह उसमें अपना मुंह नहीं डालेगा ।
- पेट की मांग मर्यादित है ।
  मन की मांग अमर्यादित है ।
- कुदरत ने पेट की रचना इस प्रकार की है कि उसमें मर्यादित ही समा सकता है । थोडा भी ज्यादा आ जाय तो वह उसे बाहर निकाल देता है । ज्यादा खाने से या तो उल्टी हो जाती है अथवा दस्त लग जाती है ।

परंतु मन तो बहुत विचित्र है । उसे तो चाहे जितना मिले, तृप्ति का अनुभव होता ही नहीं है ।

- इच्छापूर्ति द्वारा मन कभी संतुष्ट नहीं होता है, मन की संतुष्टि का एक ही उपाय है-इच्छा मुक्ति ! 'जिसको कछु न चाहिए, वह शहनशाह का भी शहनशाह है ।'
- गृहस्थ को व्यापार अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार करना चाहिए । पराए धन से व्यापार करने पर दुर्ध्यान होने की आशंका रहती है ।
- धंधा चालू रखकर दान-धर्म करना, इसके बजाय तो धंधा बंदकर अन्य आराधना करना ज्यादा श्रेष्ठ है ।
- अन्याय से उपार्जित धन इस लोक में भी अहितकर बनता है और परलोक में भी ।

- पापनुबंधी पुण्य का उदय भी व्यक्ति के पास पाप-प्रवृत्ति ही कराता है ।
- सिद्धपद पुरुषार्थ से साध्य है, परंतु अरिहंत पद पुरुषार्थ से साध्य नहीं है । अनादिकाल से जिस आत्मा में तीर्थंकर बनने की योग्यता पडी हो, वही आत्मा तीर्थंकर पद प्राप्त कर सकती है ।
- तीर्थंकर की आत्मा जो सम्यग्दर्शन प्राप्त करती है, उसे वरबोधि कहते है ।
- पुरुष अर्थात् आत्मा ! पुरुष की इच्छा का जो विषय बने उसे अर्थ कहते हैं ये पुरुषार्थ चार हैं–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष !

- जिसे शाश्वत सुख चाहिए उसे मोक्ष की इच्छा होती है और जिसे अस्थायी सुख चाहिए उसे अर्थ काम की इच्छा होती है ।
- अर्थ, काम और मोक्ष इन तीनों का उपाय धर्म है ।
- सिर्फ देना यह दान कहलाता है, परंतु धन की मुर्च्छा तोडने के लिए देना, वह दान धर्म कहलाता है ।
- अर्थ और काम जिसे भयंकर लगते हो वही अर्थ और काम का त्याग कर सकता है, वही व्यक्ति सच्चा धर्म कर सकता है ।
- पूर्व के धर्म बिना अर्थ-काम की प्राप्ति नहीं होती है ।
- मोक्ष भाग्य से नहीं, पुरुषार्थ से मिलता है ।

- दूसरों को सुधारने की बजाय अपने आपको सुधारने की कोशिश करो ।
- अपने कर्त्तव्य पालन में कभी पीछे न रहे ।
- किसी के लालच में न फंसे ! कर्जा बना रहे, उतना खर्च न करे ।
- अपनी आवश्यकताओं को कम करने की कोशिश करो ।
- किसी ने योग्य सलाह दी हो तो नाराज न हो ।

- स्त्री को नौकरी नहीं करनी चाहिये । आजीविका का साधन न हो तो अपने घर पर कोई कार्य कर अर्थार्जन का प्रयास करे ।
- देर रात तक घर से बाहर नहीं रहना चाहिये ।
- प्रयोजन बिना दूसरों के घर पर नहीं जाना चाहिये ।
- किसी पर झूठा आरोप नहीं लगाना चाहिये ।
- माता-पिता और गुरु को छोडकर अन्य किसी को गुप्त बात नहीं कहनी चाहिये ।
- अपनी आय के अनुसार व्यय करना चाहिये ।

- हंसी मजाक करते हुए रास्ते पर नहीं चलना चाहिये, दूसरों की निंदा न करे ।
- खुद का कार्य खुद करे, दूसरों की अपेक्षा न रखें ।
- उपकारी का उपकार कभी न भूलें ।
- भव आलोचना अवश्य करें ।
- प्रतिदिन परोपकार का एक कार्य अवश्य करें ।
- अपना चेहरा हसमुख Smiling रखे ।
- किसी के साथ विश्वास-घात न करे ।

- दृष्टिदोष और दोषदृष्टि से बचें ।
- रोग हो वैसा न खाएं, क्लेश हो वैसा न बोले ।
- शुभ विचार पैदा हो जाय तो उसे तत्काल आचरण में लाने का प्रयत्न करना चाहिये और अशुभ विचार पैदा हो जाय तो उसे Delay करने की कोशिश करनी चाहिये ।
- संयम के उपकरण भी संयम-साधक न बने तो वे अधिकरण बन जाते है ।
- धन से सिर्फ सुख की सामग्रियाँ प्राप्त होती है । पुण्य से सुख की सामग्री व सुरक्षा पैदा होती है । जबकि परमात्मा से सुख की सामग्री, सुरक्षा, सद्गति व परमगति प्राप्त होती है ।

- दुर्बुद्धि संसार वृक्ष का मूल है ।
  दुराचरण संसार वृक्ष के पत्ते है ।
  दु:ख-दर्द संसार वृक्ष के फल है ।
- उम्र बढ जाने से कभी वैराग्य पैदा नहीं होता है, वैराग्य के लिए तो विवेक चाहिये ।
- 'सभी सुख मुझे मिले' यह भोगी की इच्छा होती हैं,
  सभी को सुख मिले-'यह इच्छा त्यागी-संयमी की होती है ।'
- 100 करोड का कोहिनूर हीरा खरीदना सरल है, परंतु ज्ञान बढने के बाद अहंकार का त्याग करना कठिन है ।

- धर्मवृक्ष का मूल विनय है ।
  धर्मवृक्ष का फूल विवेक है ।
  धर्मवृक्ष का फल जीव मैत्री है ।
- दूसरों के गुण देखने में अपनी दृष्टि Camera जैसी होनी चाहिये ।
- दु:ख सदैव सहन करते रहो ।
  सुख सदैव बांटते रहो ।
  गुण सदैव आत्मसात् करते रहो ।
- प्रभु ने अपने अपकारी को भी उपकारी माना हैं तो हम कम से कम उपकारी को तो उपकारी माने ।

❋ शिल्पी पत्थर में से प्रभु प्रतिमा प्रकट करता है, साधक साधना द्वारा आत्मगुणों को प्रकट करता है ।

❋ साधना के तीन सूत्र :– 1) किसी को दु:ख न दे ।
2) आए दु:ख से घबराएं नहीं ।
3) दु:ख लाने वाली पाप प्रवृत्ति न करे ।

## स्वास्थ्य सूत्र

❋ खाए आधा
पीए दुगुणा
चले तिगुणा
हंसे चउ गुणा ।

## भोजन विवेक

❋ पानी के ग्लास को होठ पर लगाने पर 300 अरब वायरस (जीवाणु) चिपक सकते हैं । दूसरा व्यक्ति उसी झूठे ग्लास से पानी पीए तो वे वायरस रोग का कारण बन सकते है ।

❋ संसारी मन, शरीर के सुख-दु:ख की चिंता करता रहता है, जब-कि संयमी मन आत्मा के गुण दोषों की चिंता करता है ।

❋ स्वभाव का मेल न होने से पति-पत्नी के तलाक के किस्से बढते जा रहे है । भाई-भाई व भाई-बहन के बीच व्यवहार टूट रहा है ।

## दान

वस्तुपाल-तेजपाल ने 6 वर्ष में 313 करोड 72 लाख रुपए धर्म कार्य में खर्च किये थे ।

मुख्य सुकृत – 1300 जिन मंदिरों का निर्माण
3200 जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार
105000 जिन प्रतिमाओं का निर्माण
984 पौषध-शालाओं का निर्माण
36 लाख रुपए-ज्ञान भंडार के निर्माण में सद्व्यय किये ।

धन्य है उनकी उदारता को !

## वह मूर्ख हैं !

- अपनी स्त्री पर पूरा विश्वास करें ।
- श्वसुर पक्ष से धन की अपेक्षा रखे ।
- वृद्धावस्था में लग्न की इच्छा करें ।

कृष्ण का जीवन फूल बना,
कंस का जीवन धूल बना ।
एक का नाम हो गया,
दूसरा बदनाम हो गया ।

## कठिन

- जीवन में भूल का होना सहज है ।
  जीवन में भूल को समझना सरल है ।
  परंतु भूल को स्वीकार करना, अत्यंत कठिन है ।
- दुनिया में भगवान को माननेवाले बहुत हैं
  परंतु भगवान की आज्ञा को माननेवाले बहुत कम है ।
- भूल हो जाना प्रकृति हैं
  भूल का स्वीकार होना संस्कृति है और
  भूल को सुधारना प्रगति है ।

## आधुनिक परिभाषाएं

- अरे ! क्रोध तो Controling Power है,
  मान तो Status Symbol है,
  माया तो Business Policy है, और
  लोभ तो Investment है ।

## क्या खोया ?

- आज के धनवान के पास न सच्ची भूख हैं
  और न सच्ची नींद है ।

## भोजन

- पशु खाता है पेट के लिए
  मूर्ख खाता है स्वाद के लिए
  भोगी खाता है आरोग्य के लिए
  साधक खाता है साधना के लिए ।

## नामकरण

- महापुरुषों का नाम से रोड का नामकरण करना आसान है परंतु, उनके बताए रोड (मार्ग) पर चलना कठिन है ।

## सद्गति

- मन को साफ करे, जगत् को माफ करे
  जगत्पति को याद करे तो, सद्गति निश्चित है ।
- दु:ख को स्वीकार करे
  प्रलोभन का इन्कार करे और
  सुकृत्य का स्वीकार करे ।

## रोग

- अधिकांश धनवान् लोग
  A- Attack (Heart)
  B- Blood Pressure
  C - Cancer
  D- Diabetes से पीडित है ।
  अत: धन के पीछे पागल न बनें ।

- आत्महत्या में मानव की हत्या है,
  गर्भपात में मानवता की हत्या है ।

- प्रभु ने जो छोड़ा, उसे छोडना सीखें ।
  प्रभु ने जो पाया, उसे पाने की प्रार्थना करे ।

- भूतकाल जो बीत चूका है, उसके लिए
  रोने का कोई अर्थ है । वह तो नदी के
  प्रवाह की तरह बह चुका है । परंतु, 'आज'
  आपके हाथ में है । 'आज' के पाषाण पर
  पुरुषार्थ के हथोडे लगाकर उसे सुधारा जा सकता है ।

- सामनेवाला व्यक्ति अपने से बडा हैं या छोटा है,
  यह महत्त्व की बात नहीं हैं, परंतु उसकी बात सही है,
  तो हमें उसका स्वीकार करना ही चाहिये

- 'बालादपि हितं ग्राह्यम्' हितकारी बात करनेवाला
  यदि बालक हो तो उससे भी हमें अवश्य
  प्रेरणा लेनी चाहिये ।

- वर्तमान का साधु जीवन बकुश और कुशील दोष से दुषित है ।
  बकुश दोष से उत्तरगुण में व कुशील दोष से मूल गुण में क्षति
  होती हैं, परंतु उस क्षति का मन में खेद होने के कारण उनका
  सम्यग्दर्शन जीवंत रह सकता है ।

❋ कोई अपनी प्रशंसा करे तो उसे सुनकर
फूल न जाय, परंतु गंभीरता पूर्वक सोचे कि
'मेरी जो प्रशंसा हो रही हैं, क्या मैं
उस प्रशंसा के पात्र हूँ ?'
यदि नहीं ! तो वह वास्तव में
प्रशंसा नहीं बल्कि चापलूसी ही है ।

❋ चेतसः स्वास्थ्यं समाधि :– चित्त की स्वस्थता-प्रसन्नता को समाधि कहा जाता है ।

❋ संयम के उपकरण आत्मा की समाधि के लिए हैं,
जब कि अधिकरण आत्मा की दुर्गति के लिए है ।

❋ मेरे जीवन में जो कुछ प्रतिकुलताएँ हैं, वे सब मेरे ही पाप कर्म के उदय के कारण है, इस प्रकार के विचार से मन प्रसन्न बनता है और समाधि बनी रहती हैं । अपने जीवन में आई प्रतिकूलताओं के दोष का टोपला दूसरों पर डालनेवाले का चित्त संक्लेशग्रस्त ही होता है ।

❋ कर्मसत्ता ने जो बाह्य परिस्थितियाँ खडी की हैं, उसे मन पर नहीं लेनेवाला ही अपने मन को समाधि में रख सकता है ।

❋ अपनी भाषा Telegram की होनी चाहिये Letter की नहीं !
तार Telegram में व्यक्ति मर्यादित शब्दों का प्रयोग करता है, जबकि पत्र में भाषा लंबी-चौडी हो जाती है ।

- वज्रस्वामी ने अपने पूर्व के तिर्यक्जृंभक जाति के देव भव में अष्टापद तीर्थपर गौतमस्वामी के पास पुंडरिक-कंडरिक अध्ययन का श्रवणकर इस प्रकार अवधारण किया कि जिसके फल स्वरुप उन्हें सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई ।
- किसी के ऊपर दोषारोपण करने से वह दोष कई गुणा बलवान् होकर अपने ऊपर हमला करता है ।
- किसी की निंदा करने से, वह दोष अपने जीवन में आए बिना नहीं रहता है ।
- अशाता तन का दु:ख है,
  असमाधि मन का दु:ख है ।

- तलवार म्यान में रहती है परंतु म्यान से अलग है, उसी प्रकार आत्मा शरीर में रहती है, परंतु शरीर से अलग है ।
- भूलने योग्य यदि कोई हो तो दूसरों की भूलें हैं । दूसरों की भूलों को याद कर हम अपनी ही समाधि को खो देते है ।
- साधु बनना सरल है परंतु दूसरे साधु के प्रति अहोभाव बनाए रखना कठिन है ।
- छोटी सी इस जिंदगी में
  पदार्थों का विस्तार क्यों करता है ?
  इस जगत् में तेरा कोई नहीं है,
  किसके ऊपर तूं ममता धारण करता है ?

- आगम आदि का स्वाध्याय समाधि का कारण है, परंतु मंत्र शक्ति का प्रभाव देवता सहन नहीं कर पाते हैं, चार संध्या समय (अकाल समय) में शुद्ध देवताओं का आवागमन ज्यादा होता है, अतः अकाल समय में आगम व पूर्वधर रचित सूत्रों का स्वाध्याय न करे ।

- उपवास करना सरल है,
  परंतु आहार का संयम कठिन है ।

- मौन रखना आसान है
  परंतु विवेक पूर्वक बोलना कठिन है ।

- **Awake, arise and stop not,**
  **Still the goal is reached**

- शब्द ज्योति भी हैं और ज्वाला भी है ।
  जो शब्द किसी के जीवन में शांति लाए,
  वे शब्द ज्योति स्वरुप है ।
  जो शब्द किसी के जीवन में आग पैदा करे
  वे शब्द ज्वाला स्वरुप है ।

- पशु, पशु के रूप में जन्म लेता है । पशु, पशु के रूप में जीता है और पशु, पशु के रूप में मरता है । उसके जीवन आत्म-विकास की संभावनाएँ नहींवत् हैं ।

- नरक में दु:ख का पार नहीं है । वहाँ अमाप दु:ख है-चौबीस घंटे दु:ख है ।
  उन जीवों को भगवान का आलंबन नहीं है । न तो वहाँ साक्षात् भगवान मिलते हैं और न ही मूर्तिरूप में ।
- वहाँ सद्गुरु का योग नहीं है । वहाँ उपदेश सुनने के लिए अवकाश नहीं है । वहाँ व्रत नहीं, नियम नहीं, पच्चक्खाण नहीं । वहाँ एक मात्र लड़ाई-झगड़े हैं । नरक के जीव सतत लड़ते-झगड़ते रहते हैं ।
- पतन और विकास की सब-कुछ संभावनाएँ मनुष्य जीवन में ही हैं ।

- मनुष्य ही दिव्य जीवन जी सकता है, वह साक्षात् भगवान बन सकता है ।
- मनुष्य ही अपने जीवन में मानवता का संपूर्ण विकास कर सकता है ।
- मनुष्य अपने जीवन में पशु का भी जीवन जी सकता है, कई मनुष्यों को पशु की उपमा दी जाती है । 'यह तो गधा है ।' 'यह तो बैल है ।' 'यह तो कुत्ता है ।' 'यह तो बंदर है आदि ।'
- तिर्यंच व नरक को दुर्गति कहा है, क्योंकि वहाँ धर्म आराधना मुश्किल है ।

- मनुष्य शैतान भी बन सकता है । जिस प्रकार पत्थर में से भगवान की मूर्ति बन सकती है और बंदर की भी । सब कुछ संभावनाएँ मानव जीवन में होने के कारण ही मनुष्य-जीवन की सबसे अधिक कीमत है ।
- भगवान ने सांसारिक जीवों की चार गतियाँ बतलाई हैं-देव-नारक, मनुष्य और तिर्यंच ! उसमें देव व मनुष्य गति को सद्‌गति कहते हैं, जबकि तिर्यंच और नरक गति को दुर्गति कहते हैं ।

  मनुष्य व देवगति को सद्‌गति कहते हैं क्योंकि वहाँ आत्मा का कुछ विकास संभव है ।

- देवता प्रभु के समवसरण में जाकर परमात्मा की देशना सुन सकते हैं । देवता परमात्मा की उत्तम द्रव्यों से भक्ति कर सकते हैं ।

  देवता-नंदीश्वर द्वीप आदि तीर्थों की यात्रा कर सकते हैं ।

- मनुष्य गति, सद्‌गति है क्योंकि मनुष्य अपने जीवन में दीक्षा ले सकता है । वह अपने जीवन में पापों का संपूर्ण अथवा आंशिक त्याग कर सकता है ।
- मनुष्य सामायिक कर सकता है ।
- साधु-साध्वी को सुपात्र दान कर सकता है ।

- सम्यग्ज्ञान की आराधना कर सकता है ।
- आयंबिल-उपवास एकासना-बियासना आदि तप कर सकता है ।
- कायोत्सर्ग की साधना कर सकता है ।
- पशु जीवन में पराधीनता है । कई पशुओं को बाँधकर रखा जाता है ।
- गाय को गोशाला में बंधन है ।
- भैंस को तबेले में बाँधकर रखा जाता है ।
- बैल को किसान खेती में उपयोग करता है अत: उसे बंधन है ।

- घोड़े को युद्ध में उपयोग किये जाने से बंधन है ।
- हाथी को बंधन है-महावत हाथी को अंकुश द्वारा वश में रखता है ।
- जंगल के राजा सिंह को भी सर्कस में पिंजरे में बंद रखा जाता है ।

## प्रमाद ही मृत्यु है

- क्षणभर के उत्सूत्र भाषण ने मरीचि के 1 कोटाकोटि सागरोपम का संसार बढ़ा दिया ।
- कुछ दिनों की रसना की आसक्ति ने कंडरीक मुनि के 1000 वर्ष की संयम साधना नष्ट कर दी ।

- गुरु की अवज्ञा ने कुलबालक मुनि का पतन करा दिया ।
- स्कंदिलाचार्य ने क्षणिक क्रोध द्वारा अपना संसार बढ़ा लिया ।
- क्षणिक दुर्ध्यान ने मरुभूति को हाथी के भव में पटक दिया ।
- दृष्टिदोष के पाप की शुद्धि नहीं करने से रुक्मि साध्वी ने स्त्री अवतार के 1 लाख भव खड़े कर दिये ।
- विशुद्धसंयमी ऐसे जमाली मुनि भी 'भगवान की भूल है' कथन के प्रमाद के कारण जैनसंघ से बाहर हो गए ।
- ''जैनशासन में ब्रह्मचर्य व्रत में भी अपवाद है'' 'इस प्रकार कहनेवाले कमलप्रभ आचार्य ने अपना संसार बढ़ा लिया ।'

- कामी-क्रोधी व लोभी व्यक्ति भी धर्म की क्रियाएँ कर सकता है, परंतु धर्मी बनने के लिए तो हृदय को कोमल, स्वभाव को शांत और मन को सरल बनाना पड़ता है ।
- काम पुरुषार्थ से भी अर्थ पुरुषार्थ ज्यादा खतरनाक है, क्योंकि स्त्री आदि से झगड़ा होने पर व्यक्ति स्त्री के साथ संबंध तोड़ने के लिए तैयार हो जाता है । परंतु धन से व्यक्ति को कभी भी कंटाला नहीं आता है । धन के साथ संबंध तोड़ने की इच्छा कभी नहीं होती है ।
- वास्तविक सुख का अनुभव करना हो तो चित्त का प्रसन्न होना जरूरी है ।

- काम का त्याग तो भी सरल है, परंतु धन का त्याग अत्यंत कठिन है क्योंकि जीवन में स्त्री का प्रवेश देरी से होता है जबकि धन का परिचय तो बचपन से ही हो जाता है ।
- भोजन करना और भोजन पचाना, दोनों में बहुत बड़ा अंतर है ।
- धर्म करना और धर्मी बनना इन दोनों के बीच भी बहुत बड़ा अंतर है ।
- इच्छाएं आकाश से समान अनंत है । इच्छाओं की पूर्ति से नहीं, इच्छाओं के निरोध से ही सुख की प्राप्ति हो सकती है ।

- सुख बाह्य भौतिक पदार्थों में नहीं है, अतः सुख प्राप्ति के लिए बाह्य पदार्थों की खोज न करें, सुख तो आत्मा के भीतर रहा हुआ है ।
- यदि तुम दूसरों का भला चाहोगे तो तुम्हारा भी भला होगा । यदि तुम दूसरों का बुरा चाहोगे तो तुम्हारा ही बुरा होगा ।
- जो स्वार्थी होता है, वह सिर्फ अपने ही सुख-दुःख का विचार करता है । स्वार्थी व्यक्ति का कभी मोक्ष नहीं होता ।
- काम, क्रोध और लोभ आत्मा के भयंकर शत्रु है । इन शत्रुओं का नाश किए बिना आत्मा का कल्याण शक्य नहीं है ।

- ब्रह्मचर्य का पालन सर्वश्रेष्ठ तप है । निर्मल ब्रह्मचारी को देवता भी नमस्कार करते है ।
- कभी कठोर शब्द न बोले, कटु वाणी के प्रहार से सामनेवाले का हृदय बिंध जाता है ।
- किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो । सभी प्राणी जीना चाहते है, मरना किसी को पसंद नहीं है ।
- क्रोध करने से विवेक नष्ट हो जाता है । अविवेकी व्यक्ति कुछ भी गलत काम कर सकता है ।

- अपने उपकारी के उपकार को जो भूल जाता है, वह कृतघ्नी कहलाता है । कृतघ्नी व्यक्ति अपने आत्म विकास को रोक देता है ।
- प्रमाद ही मृत्यु है, आत्म-जागृति ही जीवन है ।
- सत्कर्म करने के बाद फल की इच्छा कभी नहीं करनी चाहिये । जो फल की अपेक्षा रखता है, वह सत्कर्म के वास्तविक फल को खो देता है ।
- तप का ध्येय काया का शोषण नहीं होना चाहिये । बल्कि काया की ममता का त्याग और रसना जय होना चाहिये ।

- हृदय में माया-कपट न करे । जो मायावी होता हैं वह सर्प की तरह सदैव अविश्वसनीय हो जाता है ।
- जैन दर्शन के अनुसार अरिहंत, अशरीरी, आचार्य, उपाध्याय और मुनि के आद्य अक्षर अ+अ+आ+उ+म् को योग से ओम् बना है ।
- ओम् यह रत्नत्रयी का भी प्रतीक है । 'अ' ज्ञान का, 'उ' - दर्शन का और 'म्' चारित्र का प्रतीक है । अ+उ+म्=ओम् । इस प्रकार ओम् में रत्नत्रयी रही हुई है ।

- वैदिक परंपरा के अनुसार अ+उ+म् ये तीन अक्षर 'अ' ब्रह्मा का, उ=विष्णु का और 'म्'–महेश का प्रतीक है ।
- दान का फल वस्तु के आधार पर नहीं, किंतु आपकी वृत्ति के आधार पर है । क्या दिया ? यह महत्त्व की वस्तु नहीं है, किंतु किस भाव से दिया ? यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है ।
- आरोग्य प्राप्ति के लिए सिर्फ दवाई का सेवन ही पर्याप्त नहीं है, उसके साथ अपथ्य का त्याग भी जरुरी है । धर्मी बनने के लिए धर्म का सेवन ही पर्याप्त नहीं है, इसके साथ ही पाप का त्याग भी जरुरी है ।

- धर्म का प्रत्यक्ष फल हैं–संतोष ! उसके परिणाम स्वरुप समाधि और सद्गति अत्यंत ही सुलभ है ।
- आज के शिक्षण व्यवस्था में Education को प्रोत्साहन दिया जा रहा है, और संस्कारों की संपूर्ण उपेक्षा की जा रही है ।
- संसार के क्षेत्र में सफलता का आधार पुण्य का उदय है, जबकि धर्म के क्षेत्र में सफलता का आधार पुरुषार्थ है । ज्यों ज्यों जीवन में पुरुषार्थ बढेगा, त्यों त्यों जीवन अधिक धर्ममय बन सकेगा ।

- दुनिया में अच्छे आदमी ब्रेक अथवा स्पीडब्रेकर का काम करते हैं, जो बुराई को रोक देते है अथवा उसकी स्पीड घटा देते है ।
- टूट गए टेबल को पैसा खर्च कर जोड सकेंगे परन्तु जो दिल टूट गया, उसे जोडना अत्यंत ही कठिन है ।
- शुभ कार्य में देर न करें, अशुभ कार्य शीघ्र न करें ।
- भय से मौन पशुता हैं, संयम से मौन साधुता है ।
- बडे व्यक्ति को अपने घर बुलाना हो तो घर स्वच्छ होना जरुरी है तो मन में प्रभु को प्रतिष्ठित करना हो तो क्या उसकी पवित्रता जरुरी नहीं ?

- नींव बिना इमारत अल्प जीवी हैं, उसी प्रकार विनय के बिना गुणों की इमारत भी अल्प जीवी रहती है ।
- पत्थर पर फूल नहीं उगते, उसी प्रकार कृतघ्नी व्यक्ति के हृदय में गुणों का बीजाधान नहीं हो सकता ।
- संपत्ति का अभाव व्यक्ति को दु:खी कर सकता है, परंतु विवेक का अभाव व्यक्ति को पापी बना देता है ।
- दुर्जनों की संगति में सज्जन बने रहना, अत्यंत ही कठिन कार्य है ।

- माता-पिता को संतान के प्रति प्रेम, वर्तमान जीवन की दु:ख मुक्ति तक सीमित होता है, जबकि गुरु का प्रेम, शिष्य को पाप-मुक्त बनाने तक अमर्यादित होता है ।
  कृपणता से भी अधिक खतरनाक कृतघ्नता है ।
- कृतघ्नता अर्थात् उपकारी के उपकार को भूल जाना ।
  कृतज्ञता से जीवन में नम्रता का विकास होता है, जबकि कृतघ्नता से अहंकार पुष्ट होता है ।
- कर्म से मलिन आत्मा मलिन वस्त्र के समान है । पंच परमेष्ठी पानी तुल्य व ज्ञानादि चार तत्त्व साबुन तुल्य है ।

- धन आदि की आसक्ति से भी देव-गुरु की आशातना का पाप अति भयंकर है ।
- रुप और कुल से व्यक्ति महान् नहीं बनता है, व्यक्ति अपने कर्म से ही महान् बनता है ।
- उबलते हुए पानी में प्रतिबिंब दिखाई नहीं देता है, उसी प्रकार क्रोधी व्यक्ति अपना हित नहीं समझ पाता है ।
- आज के सूर्य को आगामी कल के बादल के पीछे छुपा देना, उसी का नाम चिंता है ।

- जिंदगी फूलों की शय्या नहीं किंतु युद्ध का मैदान है ।
- हीरें को घिसने पर ही उसका तेज प्रकट होता है, उसी प्रकार कसौटी में से प्रसार होने पर ही व्यक्ति पूर्ण बनता है ।
- दुर्जन की अपेक्षा सर्प अच्छा है, सर्प कभी-कभी डंख देता है, जबकि दुर्जन कदम-कदम पर काटता रहता है ।
- किसी की भूल निकालना सरल है, किसी को सुधारना कठिन है ।
- धन द्वारा दो वस्तुएँ खरीदी जाती हैं भय और दु:ख ।

- जिसके जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं होता है, उसी को समय प्रसार करने के लिए साधन शोधने पडते है ।
- ध्येयहीन जीवन नाविक बिना की नाव समान है ।
- अश्लील पुस्तके पढना विष पान समान है ।
- अच्छी पुस्तकों से रहित घर श्मशान जैसा है ।
- जो हार से घबराता है, उसकी निश्चित हार है ।
- अच्छे व्यक्ति मजाक में भी जो बोलते हैं, वे वचन शिलालेख समान होते हैं, जबकि दुर्जन व्यक्ति सोगंद खाकर भी बोलेगा तो भी उसके वचन जल की रेखा समान ही होंगे ।

- मित्र ढाल समान होना चाहियें, जो सुख में पीछे व दु:ख में आगे रहता है ।
- भाषण चांदी है तो मौन स्वर्ण है ।
- मौन व एकांत, आत्मा के श्रेष्ठ मित्र है ।
- मौन सर्वोत्तम भाषण है, बोलना ही पडे तो कम से कम बोले ।
- क्रोध को जीतने के लिए मौन श्रेष्ठ उपाय है ।
- विद्या से विनय प्राप्त होता है और विनय से योग्यता प्राप्त होती है ।

- सत्य के लिए सब कुछ छोड देना ठीक हैं, किंतु अन्य किसी वस्तु के लिए सत्य का बलिदान देना ठीक नहीं है ।
- कोमलता हृदय का धर्म हैं और कठोरता देह का धर्म है । हृदय को फूल से ही अधिक कोमल और देह को वज्र से भी अधिक कठोर बनाओ ।
- महापुरुष अपने जीवन के द्वारा मार्ग बतलाते है...परंतु उस मार्ग पर चलना तो स्वयं को ही पडता है । महापुरुषों का जीवन एक आदर्श जीवन होता हैं...उनके बतलाए हुए मार्ग पर चलने से कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सुख और शांति प्राप्त कर सकता है ।

- धर्म करना और धर्मी बनना इन दोनों के बीच बहुत बडा अंतर है ।
- भोजन करना और भोजन पचाना, दोनों में बहुत बडा अंतर है ।
- कामी-क्रोधी व लोभी व्यक्ति भी धर्म की क्रियाएं कर सकता हैं, परंतु धर्मी बनने के लिए तो हृदय को कोमल, स्वभाव को शांत और मन को सरल बनाना पडता है ।
- वास्तविक सुख का अनुभव करना हो तो चित्त प्रसन्न होना जरुरी है ।
- भगवान की द्रव्य पूजा, द्रव्य (धन) की आसक्ति को उतारने के लिए है ।

- जिस अनुष्ठान का अंतिम उद्देश्य भावदया नहीं हैं, वह अनुष्ठान जैन दर्शन को मान्य नहीं है अनुकंपा, जीवदया, जिनमंदिर निर्माण सभी अनुष्ठानों के आचरण में स्व आत्मा की भावदया तो अवश्य होनी ही चाहिये ।
- अर्थ और काम के संस्कार तो अनादि से हैं, अतः उसके लिए किसी प्रकार के उपदेश की अपेक्षा नहीं रहती हैं, परंतु धर्म के संस्कार बहुत ही कम है, अतः उसके लिए उपदेश जरुरी है ।
- भूतकाल में असाढाभूति, कंडरिक मुनि, सिंह केसरीया मुनि आदि भी रसनेन्द्रिय की आसक्ति के कारण पतित हो गए थे ।

- जिन पूजा में हल्के द्रव्य नहीं चाहिये,
  तो प्रभु के पास हल्के विचार लेकर कैसे जाएं ?
- भय हमेंशा अज्ञान में से उत्पन्न होता है ।
- एक चैत्यवंदन में चारों निक्षेपों से प्रभु की भक्ति रही हुई है ।
  लोगस्स सूत्र के माध्यम से नाम निक्षेप द्वारा प्रभु की भक्ति है ।
  जंकिंचि, जावंत्ति एवं अरिहंत चेइयाणं द्वारा स्थापना निक्षेप से प्रभु की भक्ति है ।
- सम्यग्दृष्टि आत्मा भीतर से जागृत होने के कारण उसके लिए पुण्य और पाप दोनों का उदय लाभकारी है ।

- मिथ्यादृष्टि की आत्मा सोई हुई होने के कारण उसके लिए पुण्य और पाप दोनों का उदय हानिकारक है ।
- सामायिक में भावधर्म की प्रधानता है, अतः उसमें द्रव्य पूजा का भी त्याग होता है ।
- साधु की दैनिक क्रिया में नौ बार 'करेमि भंते' सूत्र बोलकर अपनी प्रतिज्ञा को याद किया जाता है ।
- जिस आत्मा में मोक्ष पाने की इच्छा पैदा होती है, उस आत्मा का मोक्ष अवश्य होता है ।

- रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु इन तीन हमलों का अपने श्रुतज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम पर प्रभाव पडता है । इसलिए रोग व वृद्धावस्था में व्यक्ति भूल जाता है, मरने के बाद भी सब भूला दिया जाता है ।
- 18 पापस्थानकों में से मिथ्यात्व के जीवित रहने पर अन्य सभी 17 पाप पुष्ट होते हैं और उसके कमजोर होते ही अन्य सभी पाप कमजोर हो जाते है ।
- सभी जीवों को अभयदान देना-वह सिर्फ सर्वविरति में ही संभव है ।
- जिन मंदिर और उपाश्रय आदि धर्म स्थान मोह की गति को रोकने के लिए Speed Braker का काम करते है ।

- व्रतों का स्वीकार सिंहवृत्ति से होना चाहिये तो उन व्रतों का पालन भी सिंहवृत्ति से ही होना चाहिये ।
- तीर्थंकर के अस्तित्व में जितनी आत्माएं मोक्ष में जाती हैं, उससे भी अधिक आत्माएं तीर्थंकर के शासन को प्राप्त करके जाती है ।
- आहार, विहार और निहार की क्रिया को छोडकर तीर्थंकर परमात्मा छद्मस्थ अवस्था में प्रायः कायोत्सर्ग ध्यान में ही रहते है ।
- जिस पाप को समाज स्वीकार लेता है अर्थात् जिस पाप को सामाजिक स्वीकृति मिल जाती है, उस पाप का भय सर्वथा दूर हो जाता है, वह पाप समाज में फलता-फूलता है ।

- एक समय था, स्त्री को अपने शील की कीमत थी अतः अपने शील के रक्षण के लिए सर्वथा घुंघट प्रथा थी । 'स्त्री का रुप कोई प्रदर्शन की वस्तु नहीं है, परंतु आज वह मर्यादा टूट गई है, आज अंग-प्रदर्शन की एक Fashion चली है । परिणाम स्वरुप आज स्त्रियाँ उन वस्त्रों को ज्यादा पसंद करती हैं, जिसमें अपने अंगों का प्रदर्शन होता है ।
- राजस्थानी समाज में बहनों के लिए साडी आदि का प्रचलन था, परंतु आज पश्चिमी संस्कृति को समाज ने स्वीकार लिया है, अतः अभद्र वस्त्र पहनते हुए किसी को संकोच का अनुभव नहीं होता है ।

- गुणीजनों के प्रति जिसके दिल में अनुराग है उसके लिए तीर्थंकर पद की प्राप्ति भी दुर्लभ नहीं है ।
- दोषदृष्टि सबसे बडा दोष हैं, ऐसा व्यक्ति हर किसी में दोष ढुंढ लेता है । वह तो दूध में भी पोर (कीडा) ही शोधता है ।
- गुणवान के गुणों की प्रशंसा करने से वे गुण अपने में भी प्रकट होते है ।
- अज्ञान में से कदाग्रह का जन्म होता है और अहंकार से उसका पोषण होता है ।

- पुस्तक में रहा ज्ञान, बैंक में जमा किए हुए धन जैसा है, जबकि कंठस्थ किया हुआ ज्ञान जेब में रहे हुए रुपये जैसा है ।

  कंठस्थ किया ज्ञान सर्वत्र काम लगता है, जबकि पुस्तक में रहे ज्ञान के लिए पुस्तक की अपेक्षा रहती है ।
- विगइ शरीर में विकृति अर्थात् विकार भाव पैदा करती है ।
- आयंबिल के भोजन में विगइ का त्याग है, वह सात्त्विक भोजन है ।
- शुभ-अशुभ निमित्त को प्राप्तकर आत्मा में पडे हुए संस्कार जागृत होते है ।

- जीवन में आनेवाला हर कष्ट हमें नया और असह्य लगता है, परंतु भूतकाल में अपनी आत्मा ने हर दु:ख-हर कष्ट सहन किया है ।
- अन्य धर्मों में व्यक्ति की प्रधानता है, जैन धर्म में गुणों की प्रधानता है ।
- क्षणिक सुखों में आसक्त व्यक्ति पर अंतरंग दुश्मन हावी हो जाते है ।
- धर्म प्राप्ति के लिए जिन भक्ति और जीव मैत्री दोनों जरुरी है एक की भी उपेक्षा करने पर जीवन में सच्चा धर्म नहीं आ सकता है ।
- आसक्ति पूर्वक छ भक्ष्य विगई का सेवन आत्मा को दुर्गति के गर्त में डूबो देता है ।

- पांच इन्द्रियों को पंच परमेष्ठी के साथ जोडने से ये ही इन्द्रियां लाभ का कारण बनती है । शब्द सुनो तो अरिहंतों के ! रुप देखों तो सिद्धो का । गंध लो तो आचार्यों के सदाचार की । रस लो तो उपाध्याय के स्वाध्याय का, स्पर्श करो तो साधु जन की वैयावच्च का ।
- संगमदेव और चंडकोशिक सर्प दोनों ने प्रभु पर अपकार किया, परंतु प्रभु ने चंडकोशिक को प्रतिबोध दिया संगमदेव को नहीं, संगम के प्रसंग में प्रभु मौन रहे । कारण ? चंडकोशिक में योग्यता थी, संगम में अयोग्यता थी ।
- तप का अजीर्ण क्रोध है और तप का फल समता है ।

- साधु के लिए भावपूजा प्रधान है, जबकि श्रावक के लिए द्रव्यपूजा प्रधान है, द्रव्यपूजा के बाद ही भावपूजा करने का विधान है । द्रव्य की मूर्च्छा उतारने के लिए श्रावक को सर्व प्रथम द्रव्यपूजा अनिवार्य है ।
- प्रतिकूल संयोगों में किए हुए धर्म का अत्यधिक महत्व है । अनुकूलता में धर्म कर लेना कोई बडी बात नहीं है । संयोग प्रतिकूल हो, फिर भी धर्म में दृढ रहना, यही महत्त्वपूर्ण है ।
- पाप आचरण की मजा थोडे समय के लिए है, परंतु पाप की सजा भारी है, अतः जीवन में पाप करते समय लाख बार विचार करना चाहिये ।

- जगत् के सभी जीवों से भी बढकर पुण्य का उदय तीर्थंकर परमात्मा को होता है, फिर भी वे परमात्मा पुण्य के उदय से प्राप्त सामग्री का त्याग ही करते है ।
- प्रभु के ध्यान से आत्मा स्वयं परमात्मा बन जाती है ।
- देव और गुरु का संयोग होने पर भी वह सुधरता नहीं है, जिसमें योग्यता नहीं हो ।
- काया से पाप करने के लिए शारीरिक बल चाहिये, परंतु मन के पाप तो कायबल बिना भी हो जाते है । काया से पाप सीमित होते हैं, परंतु मन से पाप अमर्यादित होते है ।

- स्वाध्याय और जाप से मन पर नियंत्रण किया जा सकता है ।
- अपने सुख-दु:ख का विचार तो सभी प्राणी को होता है, परंतु जीव मात्र के सुख-दु:ख का विचार– 'सबको सुख मिले और सब का दु:ख दूर हो' यह सिर्फ तीर्थंकर की आत्मा को ही होता है ।
- पुण्य से प्राप्त शक्तियों का उपयोग स्वयं के लिए करे तो पाप का बंध हो और दूसरें जीवों के दु:ख निवारण के लिए करे तो पुण्य का बंध होगा ।
- खारे जल को पीने से प्यास बुझती नहीं, बढती है, उसी प्रकार इच्छाओं की पूर्ति से इच्छाएं शांत नहीं होती हैं, बल्कि बढती ही है ।

- साहस की हार, सबसे बड़ी हार है । जिसका मनोबल टूट गया, वह अपने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर सकता है ।
- अपना अनंतकाल निगोद में व्यतीत हुआ है इसी का कारण है कि धर्म कार्य में प्रमाद आता है ।
- 'ज्यों-ज्यों धन बढेगा, त्यों त्यों सुख बढेगा' यह दुनिया की झूठी मान्यता है । जबकि प्रभु का शासन इससे विपरीत ही बात करता है– 'ज्यों ज्यों जीवन में त्याग बढेगा, त्यों त्यों सुख बढेगा ।'
- पुण्य के उदय से किसी वस्तु को प्राप्तकर दूसरों को हल्का बताने की चेष्टा करना, उसी का नाम मद है ।

- ज्ञान प्राप्ति के लिए जीवन में विनय गुण जरुरी है । जो विनीत है, वही ज्ञान प्राप्त कर सकता है ।
- विनीत शिष्य ही गुरु की कृपा प्राप्त कर सकता हैं, भले ही वह गुरु से कोसो दूर रहता हो ।
- लाभांतराय कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त हुई सामग्री का भोग भी भोगांतराय कर्म का क्षयोपशम होगा, तभी कर सकोगे ! भोगांतराय कर्म का क्षयोपशम नहीं है तो चाहे जितनी सामग्री प्राप्त हुई हो, उसके एक अंश का भी उपभोग नहीं कर सकते है ।

- धन, परिवार, दुकान आदि के ममत्व को छोडना आसान हैं, परंतु शरीर के ममत्व को छोड़ना अत्यंत ही कठिन है ।
- आत्मा में सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होने पर हेयोपादेय का विवेक स्वतः पैदा हो जाता है, फिर हेय पदार्थों के त्याग के लिए और उपादेय पदार्थों के ग्रहण के लिए उपदेश की अपेक्षा नहीं रहती है । समकिती आत्मा क्षणिक व भौतिक सुख को छोडने जैसा ही मानती है, अतः उसके लिए त्याग खूब सरल हो जाता है ।
- तप द्वारा सिर्फ भोजन का त्याग ही नहीं करना है, तप द्वारा भोजन की ममता का भी त्याग होना चाहिये । भोजन का त्याग हो और ममता का त्याग न हो तो वह तप वास्तविक फलदायी नहीं बनता है ।

- अप्रशस्त क्रोध कर्म बंध का कारण है । तीर्थ की रक्षा तथा शील की रक्षा आदि के लिए किया गया क्रोध प्रशस्त क्रोध कहलाता है ।
- साधु जीवन में मनोबल हो तब तक कर्म के उदय से आए रोग को भी सहन करना चाहिये । रोग सहन न होता हो और आर्तध्यान होता हो, तभी आत्म समाधि के लिए रोग का उपचार करना चाहिये ।
- मृत्यु के बाद जो चीज साथ में चलनेवाली है, उसके लिए पुरुषार्थ नहींवत् है और जो चीज छोडकर ही जाना हैं, उसके लिए रात और दिन प्रयत्न चल रहा हैं, यह हमारी कैसी मुर्खता है !

- जन्म के समय बालक का सिर्फ माँ के साथ संबंध होता है, फिर बालक ज्यों ज्यों बडा होता जाता है, त्यों त्यों संबंधों का वर्तूल भी बढता जाता है ।
- पौद्गलिक पदार्थों के संबंध दो प्रकार से टूटते है । दीक्षा द्वारा और मृत्यु द्वारा । मृत्यु द्वारा संबंध टूटते है, परंतु उन पदार्थों का ममत्व भाव नहीं टूटता है । दीक्षा धर्म की महता इसी कारण है, क्योंकि उसमें इच्छापूर्वक संबंधों का त्याग किया जाता है ।
- धन के लिए जो पुण्य चाहिये, उससे भी बढकर पुण्य सद्बुद्धि पाने के लिए चाहिये ! धन मिलना सुलभ हैं, सद्बुद्धि मिलना दुर्लभ है ।

❋ सुख बाह्य पदार्थों में नहीं है । बाह्य पदार्थों में सुख देने का स्वभाव होता तो ज्यों ज्यों बाह्य पदार्थ बढते त्यों त्यों सुख बढता ।

❋ खाने के पदार्थ में सुख होता तो ज्यों ज्यों खाते जाते, त्यों त्यों सुख बढता रहता, परंतु खाने के पदार्थ में सुख तभी तक होता है, जब तक भूख है । भूख का दु:ख मिटते ही वे ही पदार्थ दु:ख के कारण बन जाते है ।

❋ शत्रुंजय गांव के नजदीक आए टीमाणा गांव के एक दंपत्ति ने दादा की पहली प्रक्षाल-पूजा के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का स्वीकार कर अपने दिल में रही दादा की भक्ति को अभिव्यक्त किया था ।

❋ अंतिम समय आने पर चौदहपूर्वी भी नवकार का ही आलंबन लेते है ।

❋ नवकार में जिनभक्ति है । क्षमापना में जीव मैत्री है । साधना के लिए जिनभक्ति और जीव मैत्री दोनों जरुरी है ।

❋ अभव्य आत्मा तीर्थंकर के हाथों से दीक्षित नहीं बनती हैं, उसी प्रकार शत्रुंजय के दर्शन भी नहीं कर सकती है ।

❋ मेरुपर्वत तो पांच है, परंतु शत्रुंजय गिरिराज तो एक ही है । महान् पुण्योदय से वह हमें मिला है ।

❋ तीर्थंकर के समवसरण में अभव्य आत्मा का प्रवेश हो सकता हैं, परंतु शत्रुंजय की स्पर्शना अभव्य आत्मा नहीं कर सकती है ।

- आदिनाथ प्रभु शत्रुंजय पर 99 पूर्व बार आए है । एक पूर्व = 84 लाख x 84 लाख = 70,560 अरब । 99 पूर्व = 70560 अरब x 99 = 6985440000000000 ।
- पू. आचार्य श्री भद्रसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने गृहस्थ जीवन में गिरिराज पर रही सभी प्रतिमाओं की पूजा की थी ।
- नवटुंक में कुल 124 मंदिर, 739 देरियाँ, 11474 प्रतिमाजी तथा 8461 चरण पादुकाएं है ।
- ऋषभदेव प्रभु जब भी गिरिराज पर चढे हैं, तब फागुण सुदी-8 की तिथि थी ।

- शत्रुंजय गिरिराज पर अनेक संघ इकट्ठे हुए थे । पहिले माला कौन पहिनेगा ? आखिर मात्र 22 वर्ष के नवयुवक धरणाशा पोरवाल ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का स्वीकार करके आजीवन सर्व सुखों की कुर्बानी करके सर्वप्रथम तीर्थमाला पहनी थी ।
- वि. संवत् 2061 में माघ मास में 86 वर्षीय पूज्य जंबुविजयजी म. ने पैदल चलकर ही उछलते भावों के साथ शत्रुंजय दादा की यात्रा की थी । उन्होंने अट्ठम के तीनों दिनों में दादा की यात्रा खूब भावपूर्वक की थी ।

- जीवन में सबसे अधिक पाप जवानी में ही होते है, अतः जवानी में सद्गुरु का नियंत्रण जरुरी है ।
- जो अहं से भरा होता है, वह सद्गुरु से कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाता हैं, परंतु जो 'अहं भाव' से खाली होता है, वह ही पूर्णता प्राप्त कर सकता है ।
- बाह्य पदार्थों का त्याग करना आसान है, परंतु भीतर रहे अभिमान को छोडना मुश्किल है ।
- नवकार की साधना हमें नम्र बनाती है । जो योग्य पात्र के प्रति झुकता हैं, वह स्वयं योग्यता प्राप्त करता है ।

- जिनाज्ञा की विराधना आत्मा को संसार में भटकाती है और जिनाज्ञा की आराधना आत्मा को संसार से मुक्त करती है ।
- कर्म तो जड हैं, द्रव्यकर्म आत्मा को जो सजा करते है वह भाव कर्म के कारण है ! राग-द्वेष भाव कर्म है । भावकर्म के कारण ही द्रव्य कर्म आत्मा को सजा करने में समर्थ बनते है ।
- तुंबडे का स्वभाव है–पानी में तैरने का, परंतु उस तुंबडे पर मिट्टी का बार-बार लेप कर उस लेप को सूखा दे तो भारी बना तुंबडा पानी में डूब जाएगा बस, आत्मा का स्वभाव भी ऊर्ध्वगमन का हैं, परंतु कर्म से भारी होकर आत्मा इस संसार में डूब जाती है ।

- भविष्य में आनेवाले उपसर्गों को दूर करने के लिए इन्द्र ने महावीर प्रभु से प्रार्थना की परंतु प्रभु ने इन्द्र को इन्कार कर दिया । 'मुझे तेरी मदद नहीं चाहिये ।' हंसते हंसते कर्म मैंने बांधे है तो उन कर्मों की सजा भी हंसते हंसते मुझे ही सहन करनी होगी ।
- अनुकूलता पाने की इच्छा करना आर्तध्यान है तो प्राप्त हुई अनुकूलता चली न जाय, ऐसा चिंतन करना भी आर्तध्यान है ।
- सिर्फ कष्ट सहन करने से आत्मा की मुक्ति नहीं है, परंतु समतापूर्वक कष्ट सहन करने से ही आत्मा की मुक्ति है ।
- गुरु में वात्सल्यभाव चाहिये और शिष्य में समर्पण भाव चाहिये ।

- खूनी व्यक्ति के हाथ से बनाई गई रसोई भी खानेवाले के दिल में अशुभ भाव पैदा कर सकती है ।
- अरिहंत आदि नवपद आत्मा को संसार से तारते है तो पांच इन्द्रियाँ और चार कषाय ये नौ आत्मिक शत्रु आत्मा को संसार में डूबोते है ।
- जो प्रभु ने पाया वह पाने के लिए और जो प्रभु ने छोडा उसे छोडने के लिए प्रभु के पास जाए तो प्रभु से साथ हमारा नाता जुड सकता है ।
- जयणापूर्वक प्रवृत्ति करने पर हिंसा हो जाय तो भी पाप कर्म का अल्प बंध होता है ।

- आत्म हत्या, दु:ख मुक्ति का उपाय नहीं है । आत्म हत्या तो कायरता की निशानी है ।
- गृहस्थों को हर वस्तु मापसर (प्रमाणसर) चाहिये, परंतु आश्चर्य है कि धन अमाप चाहिये ।
- त्रिषष्टि शलाका पुरुषों की अकाल मृत्यु नहीं होती है ।
- पूर्वभव में नियाणा करके आए हुए होने के कारण सभी वासुदेव और प्रतिवासुदेव मरकर नरक में ही जाते है ।

- पापों के नाश का उपाय-दुष्कृत गर्हा है तो पुण्य के पुंज को इकट्ठा करने का उपाय सुकृत अनुमोदना है ।
- धन की मुर्च्छा उतारने के ध्येय से जो दान दिया जाता हैं, वह दान ही सच्चा दान है ।
- निष्काम भाव से दिए गए दान से पुण्यानुबंधी पुण्य का बंध होता है और सकाम भाव से दिए गए दान से पापानुबंधी पुण्य का बंध होता है ।
- अपने सुख की चिंता करना आर्तध्यान है ।
  सबके सुख की चिंता करना धर्मध्यान है ।

- शरीर के ममत्व को तोडने का काम तप करता है और प्रभु के साथ संबंध जोडने का काम जप करता है ।
- निर्मलशील पालन के फलस्वरुप स्त्री भी देवों के लिए वंदनीय और पूजनीय बन जाती है ।
- दान-शील और तप में कुछ छोडने का है, जबकि भाव में कुछ भी छोडने का नहीं है, फिर भी भावधर्म की आराधना अत्यंत ही कठिन है ।

- अंतिम समय में भी शुभ भाव आ जाय तो भव सुधर जाय और अंतिम समय में भी अशुभभाव आ जाय तो यह भव बिगड जाता है ।
- नमस्करणीय ऐसे पंच परमेष्ठि भगवंतों को जो नमस्कार नहीं करता है, उसे अगले जन्म में तिर्यंच का ऐसा भव मिलता है, जहां सदा काल झुकना ही पडता है ।
- शरीर रथ है और पांच इन्द्रियाँ, पांच घोडे हैं । आत्मा उस रथ की सारथी है । सारथी यदि बराबर हो तो वह रथ को इच्छित स्थान पर पहुँचा सकता है ।

- जिस मुमुक्षु के दिल में माता-पिता के प्रति आदर या बहुमान भाव नहीं है, वह दीक्षा लेकर भी गुरु भगवंत का विनय- बहुमान कैसे कर पाएगा ?
- जिसके दिल में उपकारी गुरु के प्रति आदर-बहुमान भाव नहीं है, वह त्रिलोकनाथ देवाधिदेव परमात्मा का बहुमान भाव कैसे कर पाएगा ?
- जो व्यक्ति माता-पिता की आज्ञा नहीं मानता हैं, उनका अनादर और तिरस्कार करता है और मंदिर में जाकर प्रभु की पूजा करता हैं, वह तो 104° बुखार में घी खाने की ही चेष्टा कर रहा है ।

- 1000 वर्ष की साधना के फलस्वरुप ऋषभदेव प्रभु ने केवलज्ञान प्राप्त किया और सर्वप्रथम वह केवलज्ञान माँ को ही अर्पित किया ।
- गर्भ में रहे महावीर प्रभु के दिल में भी कैसी अपूर्व मातृभक्ति थी कि उन्होंने माँ को लेश भी पीडा न हो, इसलिए गर्भ में रहकर भी अपने शरीर की हलन-चलन बंद कर दी थी ।
- वयोवृद्ध माता-पिता को साथ में रखकर उनकी सेवा शुश्रुषा करने वाला माता-पिता के ऊपर कोई उपकार नहीं कर रहा है, बल्कि वह तो सिर्फ अपने कर्त्तव्य का पालन ही कर रहा है ।

- भाई-भाई अलग हो जाने के बाद जिसके साथ माता-पिता रहते हैं, वह बेटा यदि कहता है कि माता-पिता मेरे साथ में है तो यह उसके हृदय की संकुचित मनोवृत्ति है । उसके हृदय की तुच्छता के दर्शन यहां होते है और यदि वह कहता है कि मैं अपने माता-पिता के साथ में रहता हूँ तो उसमें उसकी मातृ-भक्ति, पितृ-भक्ति के दर्शन होते है ।
- तुम धन के मालिक तभी तक हो, जब तक श्वास है । श्वास निकल जाने के साथ ही धन पर से तुम्हारा अधिकार समाप्त हो जाता है ।
- दुनिया कहती हैं–भोग में सुख है जबकि प्रभु का शासन कहता हैं भोग में नहीं किंतु त्याग में सुख है ।

- भूल किससे नहीं होती ? पुत्री से भूल हो गई हो तो माँ उसे क्षमा कर देती है और वही भूल पुत्रवधु से हो गई हो तो सास का Temperature आसमान पर चढ जाता है । फर्क कहाँ है ? दृष्टिकोण का ही तो फर्क है ।
- जिनपूजा करनेवाले लोग ज्यादा मिलेंगे, जबकि जिनवाणी सुननेवाले कम ! वास्तव में प्रधानता जिनवाणी को देनी चाहिये, क्योंकि सही प्रकार से जिनपूजा का बोध भी जिनवाणी से ही होता है ।
- रामायण में कहा हैं–'बिन सत्संग विवेक न होइ' बिना सत्संग जीवन में विवेक पैदा नहीं होता हैं ।

- जैन साधु धर्मलाभ का ही आशीर्वाद देते है । धनवान या पुत्रवान बनने का नहीं ! क्योंकि धन, पुत्र, परिवार आदि से मिलनेवाला सुख क्षणिक और अस्थायी हैं, जबकि धर्म से मिलने वाला सुख शाश्वत और अक्षय है ।
- ईंजन आता है तो साथ में अनेक डिब्बे भी आते है । जीवन में धन आता है तो वह अनेक चिंताओं को साथ में लेकर ही आता है । धन आने के बाद उसके संरक्षण की चिंता खूब बढ जाती है ।
- स्वयं भोजन करना, मानव देह की प्रकृति किसी अन्य को हैं परंतु खिलाकर भोजन करना, इस देश की संस्कृति है ।

- जिन पूजा करते समय अपनी दृष्टि प्रभु पर स्थिर होनी चाहिये तो जिनवाणी श्रवण करते समय अपनी दृष्टि गुरु पर स्थिर होनी चाहिये ।
- यहां से विदाई लेंगे तब 24 घंटे साथ में रहनेवाला यह शरीर भी धोखा ही देने वाला है । अंत में तो सिर्फ पुण्य और पाप ही साथ चलनेवाले है ।
- दान से भी शीलधर्म की कीमत अधिक है । करोडों रुपयों के दान से भी ब्रह्मचर्य का पालन बढ जाता है । धनवान व्यक्ति धन का दानकर धर्म कर सकता है तो धनहीन व्यक्ति शील का पालन करके उससे भी अधिक धर्म कर सकता है ।

- बाह्य परिस्थितियों को बदलना आपके हाथ में नहीं हैं, परंतु अपनी मन: स्थिति को तो आप आसानी से बदल सकते हैं, क्योंकि वह आपके अधीन है । सुख-दु:ख का आधार परिस्थिति नहीं, मन:स्थिति है ।
- उत्तम पुरुषों के वचन पत्थर की लकीर के समान कभी बदलनेवाले नहीं होते हैं, जबकि अधम पुरुष अभी बोले और अभी बदल गए, जैसे होते है ।
- कहीं भी जाना हो, उसका Address आपके पास होता है, परंतु आश्चर्य है मृत्यु के बाद कहां जाना है ? उसकी कोई चिंता या प्रयत्न भी नहीं करता !

- अनीति से कमाए आपके धन पर आपके पूरे परिवार का अधिकार हैं, परंतु अनीति के पाप की सजा तो आपको ही भुगतनी होगी ।
- पुण्य के फल को पाने के लिए हम Welcome का बोर्ड लगाते हैं, जबकि पाप की सजा होती हो तो हम No Admission without Permission कर देते है ।
- इस जीभ ने तो कितनी मिठाई खा ली, फिर भी वह मीठी नहीं हुई । घी के डिब्बे खा गई, फिर भी वह चिकनी नहीं हुई । वह तो कोरी की कोरी रहती है, 'मानो मुझे कुछ मिला ही नहीं !'

- साधु आपके द्वार पर आए तो आपके भाव बढ जाते हैं, जबकि भिखारी आपके द्वार पर आता है और आपका मन बिगड जाता है । ऐसा क्यों ? क्योंकि साधु आपको देने के लिए आते है और भिखारी मांगने के लिए ।
  आप दे या न दे, साधु आपको 'धर्मलाभ' देते ही है ।
- धर्म का परोक्ष फल मोक्ष है, जबकि प्रत्यक्ष फल समाधि अर्थात् चित्त की प्रसन्नता है ।
- सांप का जहर चढा हो तो नीम के कडवे पत्ते भी मीठे लगते है । बस, मोह का जहर चढा हो संसार के दु:खदायी सुख भी मीठे लगते है ।

- मृत्यु (समाधि मृत्यु) के द्वारा ही मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं ।
- तप करते करते जीवन में समता बढनी चाहिये । तप करने के बाद भी यदि क्रोध आता हो तो समझना चाहिये कि तप का पाचन नहीं, बल्कि अजीर्ण ही हुआ है ।
- सत्ता की प्राप्ति या इन्द्र बनना दुर्लभ नहीं है, परंतु मनुष्य भव की प्राप्ति होना दुर्लभ है । क्योंकि परमात्म बनने का एक मात्र एकाधिकार मनुष्य को ही है ।
- गाय की विष्ठा की राख भी काम लगती है परंतु मर जाने के बाद मानव देह की कीमत ही क्या हैं ?

- असंख्य जीवों की हिंसा किए बिना गृहस्थ का एक समय का भोजन नहीं बनता है ।
- दु:ख आने पर मृत्यु की इच्छा करना और सुख मिलने पर जीवन की इच्छा करना भी पाप है ।
- कुत्तिया अपने बच्चे को अपने मुंह से ही उठाती है परंतु उसे एक भी दांत लगने नहीं देती हैं, जब कि वही कुतिया अपने मुंह से चूंहे को पकडती है और उसी समय वह मौत का शिकार हो जाता है । कुतिया के दिल अपनी संतान के प्रति स्नेह है, जबकि चूंहे के प्रति द्वेष है ।

- संपूर्ण निष्पाप जीवन जीने का उपाय जैन शासन में साधु-जीवन के सिवाय अन्यत्र कहीं नहीं है ।
- शत्रु को मार डालने से अपने शत्रु समाप्त होनेवाले नहीं है । शत्रु को मिटाना हो तो अपने भीतर रही शत्रुता को मिटा दो ।
- भारत में जब तक संतशाही थी, तब तक शांति थी अब संतशाही मिट गई और तानाशाही आ गई है ।
- जीवन में जब समय हाथ में होता है, तब तक सत्य समझ में नहीं आता है और जब सत्य समझ में आता है, तब समय हाथ में नहीं रहता है । यह कैसी दयनीयता है !

❋ जो बुद्धि दूसरों को ठगने का काम करती है वह बुद्धि नहीं लेकिन दुर्बुद्धि है । जो बुद्धि सद्विचार पूर्वक होती है, वह सद्बुद्धि-सुमति कहलाती है ।

❋ कामांध व्यक्ति में लज्जा नहीं होती है ।

❋ अशुभ निमित्तों से मानवीय मन जल्दी प्रभावित होता है । शुभ निमित्तों की असर हो या न हो परंतु अशुभ की असर जल्दी हो जाता है ।

❋ वर्तमान काल में हम जो कुछ आराधना-साधना करते है, उसमें उपकार महावीर प्रभु और उनके शासन का ही है ।

❋ इस दुनिया में लक्ष्मीपति कम है, लक्ष्मीदास ज्यादा । जो लक्ष्मी के पीछे भागता है, वह लक्ष्मीपति नहीं, लक्ष्मीदास ही है ।

❋ पंच परमेष्ठी भगवंत भक्ति के पात्र है, उनको दान, सेवक बनकर देना चाहिए, जबकि दीन-दु:खी को दान, अनुकंपा भाव से देना चाहिए ।

❋ सूती वस्त्रों का मूल कपास ही है और उसका रंग सफेद ही होता है । सफेद रंग शांति का भी प्रतीक है ।

❋ अज्ञानी रोते है, जो नहीं हैं उसे पाने के लिए और ज्ञानी रोते है, जो है उसे छोडने के लिए ।

- पुण्योदय के बिना न तो धन की प्राप्ति होती है और न ही प्राप्त धन के दान की भावना होती है ।
  धन की प्राप्ति के लिए जो पुण्य चाहिये, उससे भी बढकर पुण्य दान के लिए चाहिये ।
- देश में आजादी के बाद हॉस्पीटल और कोर्ट बढ गए है । इसका एक मात्र कारण जीभ पर नियंत्रण नहीं है । खाने में नियंत्रण हो तो Hospital जाना न पडे और बोलने में नियंत्रण हो तो Court में जाना न पड़े ।
- अज्ञानी जीवों को रुप का आकर्षण होता है, जब कि ज्ञानी को गुणों का आकर्षण होता है ।

- संसार में विरक्ति का भाव हो तो छह खंड के साम्राज्य को भी छोडना आसान हो जाता है और आसक्ति हो तो एक तुच्छ वस्तु को भी छोडना मुश्किल हो जाता है ।
- आंख का अंधापन जितना नुकसान नहीं करता है, उससे भी भयंकर नुकसान काम, क्रोध और लोभ का अंधापन करता है ।
- अंतरंग योग्यता और पात्रता हो तो भयंकर पापी का भी उद्धार करने के लिए भगवान सामने से चले आते है । चंडकौशिक सर्प क्रूर था-हिंसक था परंतु उसमें अंतरंग योग्यता थी तो महावीर प्रभु स्वयं उसे तारने के लिए आए ।

- सन्मति के अभाव में संपत्ति खतरनाक ही है ।
- शरीर अस्वस्थ लगे तो उसे स्वस्थ बनाने के लिए सभी लोग डॉक्टर के पास जाते हैं, उसी प्रकार जिसे अपनी आत्मा कर्म के रोग से अस्वस्थ लगेगी, वही आत्मा अपने कर्मरोग को मिटाने के लिए सद्गुरु रूपी डॉक्टर के पास जाएगी ।
- धर्म की प्रवृत्ति बढाने के साथ पाप की प्रवृत्ति बंद होनी चाहिये । एक ओर प्रभु पूजाकर प्रभु का संपर्क करे और दूसरी ओर T.V. में अश्लील दृश्य भी देखे ! यह दोहरी नीति बंद नहीं होगी, तब तक उद्धार कैसे संभव है ?

- पाप को प्रकट करना चाहिये उसके बदले लोग उसे छिपाने की कोशिश करते है ।
  पुण्य को छिपाना चाहिये इसके बदले उसका ढोल पीटा जाता है ।
- घर में चींटी को नहीं मारनेवाली स्त्री Hospital में जाकर गर्भ में रही संतान की हत्या करा दे तो उसे जैन कैसे कहा जाय ?
- उपदेश सभी को दिया जाता है, परंतु अपनी-अपनी पात्रता के अनुसार ही व्यक्ति उसे ग्रहण करता है ।
  नदी में पानी भरपूर है, परंतु जिसके पास जितना बडा पात्र होगा, उसी के अनुसार उसे पानी मिलनेवाला है ।

- सुख की क्षण जल्दी बीत जाती है, जबकि दु:ख में समय लंबा लगता है ।
- पुण्य के उदय से प्राप्त हुई भौतिक सुख सामग्री का भोग करना भी पाप है ।
- अयोग्य व्यक्ति को प्राप्त हुए अधिकार उसी व्यक्ति को भयंकर नुकसान पहुँचाते है ।
- आग, हवा और पानी नियंत्रण में हो तो जीवन जीने के साधन है, अन्यथा वे ही मौत के दूत है ।
- परमात्मा तो तारने के लिए ही बैठे है, परंतु हमारी अपात्रता के कारण ही हमारा कल्याण नहीं हो पाया है ।

- पारसमणि के स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है तो प्रभु के स्पर्श-संग से अपनी आत्मा परमात्मा क्यों न बने ?
- प्रभु के चरणों में तन, वचन और धन का समर्पण आसान है, परंतु मन का समर्पण सबसे अधिक कठिन है ।
- सिर्फ देना वह दान नहीं है, परंतु जब भावपूर्वक दान किया जाता है, वही दान मुक्ति का कारण बनता है ।
- मान करना पाप है, परंतु सन्मान का दान करना, सबसे बडा धर्म है । पुण्य बंध के 9 प्रकार है, उसमें सर्वाधिक पुण्य नमस्कार के दान से होता है ।

- पुण्य बंध की प्रवृत्ति कर हम सुख को आमंत्रण देते है और पाप की प्रवृत्ति कर हम दु:ख को आमंत्रण देते है । जीवन में सुख-दु:ख भी बिना आमंत्रण नहीं आते है ।
- अमृत नाम का पदार्थ दुनिया में कहीं दिखता नहीं है, परंतु सचमायने में तो मानव की जीभ में ही अमृत है, बशर्ते वह प्रिय व हितकारी बोले तो !
- शरीर को जो भाडे का घर समझता है, उसे यह घर खाली करते समय दु:ख नहीं होता है, परंतु जो शरीर को अपना घर समझता है उसे मत्यु के समय दु:ख का पार नहीं होता है ।

- सुकृत की अनुमोदना करने से उस सुकृत का फल अनेक गुणा बढ जाता है ।
- समझदार के लिए एक ईशारा काफी है । हनुमानजी ने सिर्फ सूर्यास्त का दृश्य देखा और उनकी आत्मा एकदम जागृत हो गई ।
- गुरु में अयोग्यता होने पर भी यदि शिष्य में समर्पण भाव हो तो वह शिष्य तिर जाता है ।
- प्रभु के प्रति भक्ति, जीवों के प्रति मैत्री और जड पदार्थों के प्रति विरक्ति यह भवसागर तिरने का सरल उपाय है ।

- दुन्यवी पदार्थों का ज्ञान इन्द्रियों के माध्यम से हो सकता है, परंतु अतीन्द्रिय पदार्थों को इन्द्रियों के माध्यम से नहीं जान सकते है, उसके लिए तो सर्वज्ञ के वचनों पर विश्वास रखना ही जरुरी है ।
- दुनिया बाहर के दुश्मनों को खत्म करने की बात करती हैं जबकि प्रभु का शासन आत्मा के अंतरंग शत्रुओं से लडना सिखाती है ।
- जो योग्य आत्मा को नहीं झुकता है उसे आगामी भवों में जिंदगी भर झुकना पडे ऐसी तिर्यंच गति प्राप्त होती है, जहां मस्तक सदैव झुका रहता है ।

- दान और तप मर्यादित ही हो सकता है, परंतु भाव धर्म में तो कोई मर्यादा नहीं है । दान तो Limited व्यक्तियों को ही दे सकते हैं, परंतु कल्याण की कामना तो जीव मात्र की कर सकते है ।
- जहां सच्चा परोपकार होगा, वहां सच्चा स्वोपकार होगा ही ।
- देव और धर्म तत्व की सच्ची पहिचान गुरु भगवंत ही कराते हैं, इसी कारण उन्हें तत्त्वत्रयी रूपी 'देव-गुरु-धर्म' के बीच में रखा जाता है ।
- कष्टों को सहन करना आसान है, परंतु किए हुए पापों का प्रायश्चित्त स्वीकार करना, कठिन है ।

- जिसने जिनवचन का अमृत पान किया हो, उसे मृत्यु का भय सता नहीं सकता है, ऐसी आत्मा तो मृत्यु के प्रसंग में भी प्रसन्न ही रहती है ।
- जगत् के जीवमात्र का हित तो कभी होनेवाला नहीं हैं, परंतु जगत् के जीव मात्र के कल्याण की कामना तो कर सकते है । वह पवित्र भावना ही आत्मा को तीर्थंकर बनाती है ।
- पूर्ण सुख मोक्ष में है, परंतु उसका Sample समता है । जिसे समता का सुख पसंद पड गया, उसे मोक्ष का सुख पसंद पडेगा ही ।

- धन की प्राप्ति में पुण्य की प्रधानता है । धर्म की साधना में पुरुषार्थ की प्रधानता है ।
- माल का Production फेक्ट्री में होता है, परंतु उस माल को बेचने के लिए बाजार में तो Sample ही ले जाया जाता है Sample पसंद आ गया तो माल बिकने में देर नहीं लगती है ।
- जो आत्माएं मोहाधीन होती हैं, उन पर कर्मसत्ता का शासन चलता है । जिसने मोह को जीत लिया, कर्मसत्ता भी उनके अनुकूल बन जाती है ।
- भोजन से शरीर की पुष्टि होती है, उसी प्रकार सद्विचारों से मन की पुष्टि होती है ।

- अज्ञान के अंधकार को दूर करने में
  तीर्थंकर परमात्मा सूर्य समान है,
  गणधर भगवंत चंद्र समान है और
  आचार्य भगवंत दीपक समान है ।
- बालक को अपने सच्चे घर की पहचान नहीं होने से ही वह मिट्टी के घर में खुश होता है, उसी प्रकार जीवात्मा को अपने मौलिक स्वरुप की पहचान नहीं होती है, तभी तक संसार में रस पैदा होता है ।
- इन्द्रियों के विजेता नहीं बन सको तो कम से कम इन्द्रियों के गुलाम तो मत बनों ।

- अंधेरे कमरे में से कचरा साफ करना हो तो सर्वप्रथम प्रकाश की आवश्यकता रहती है, उसी प्रकार आत्मा में से कर्म के कचरे को दूर करना हो तो सर्वप्रथम ज्ञानरूपी प्रकाश की आवश्यकता रहती है ।
- धर्म से धन भी मिलता हैं, काम सुख भी मिलते है और मोक्ष भी मिलता है, परंतु अर्थ और काम तो आत्मा को संसार में भटकाने वाले हैं, अतः धर्म की आराधना मोक्ष के लक्ष्यपूर्वक करनी चाहिये ।
- निंदा करने में जीभ का उपयोग किया तो याद रखना अगले जन्म में जीभ मिलने वाली नहीं है ।

❋ भव चक्र में द्रव्य चारित्र की प्राप्ति अनंत बार हो सकती है, परंतु भाव चारित्र की प्राप्ति अधिकतम आठ बार ही हो सकती है । उसके बाद तो उस आत्मा का अवश्य मोक्ष होता ही है ।

❋ जहां वैराग्य होगा, वहां एक मात्र मोक्ष की ही अभिलाषा रहेगी । संसार के सभी सुख नश्वर, तुच्छ व छोडने योग्य लगे तो ही सच्चा वैराग्य मानना चाहिये ।

❋ देवलोक के दिव्य सुख भी इच्छनीय नहीं है क्योंकि वे सुख भी एक दिन नष्ट हो जाने के स्वभाववाले है । मोक्ष में सुख का प्रारंभ है, किंतु अंत नहीं है ।

❋ I.C.U. में चाहे जितनी अनुकूलता मिलती हो, परंतु समझदार, व्यक्ति को वह पसंद नहीं आता है । बस, संसार में चाहे जितने भौतिक सुख मिलते हो, फिर भी विवेकी आत्मा को वह बिल्कुल पसंद नहीं आता है ।

❋ समता भाव आए बिना ममताभाव का नाश नहीं हो सकता है ।

❋ द्रव्यदया तो दु:खी प्राणी पर ही करने की होती है परंतु भावदया अपनी आत्मा पर भी कर सकते है । दु:ख के कारणभूत पाप को दूर करने की भावना भावदया कहलाती है ।

❋ कायर व्यक्ति उत्साह में आकर कार्य का प्रारंभ तो कर देते हैं, परंतु कष्ट आते ही पीछे हट जाते है, जबकि सत्त्वशाली व्यक्ति चाहे जितने विघ्न आए, वे कभी पीछे नहीं हटते है ।

- आसक्ति का संबंध सामग्री से नहीं, बल्कि मन से है । आसक्ति न हो तो छह खंड का साम्राज्य भी परिग्रह नहीं है और आसक्ति हो तो अल्पसामग्री होने पर भी महापरिग्रह है ।
- संसार के सुख को पाने के लिए हमारी आत्मा ने जो प्रयत्न-पुरुषार्थ किया है, उसका अनंतवां भाग भी यदि मोक्ष के लिए किया होता तो आज अपना स्थान संसार में नहीं, बल्कि मोक्ष में ही होता ।
- रावण बनना भी सरल नहीं है, रावण ने सीता का अपहरण किया परंतु बलात्कार नहीं !

- चौदह पूर्व का ज्ञान भी ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त हुआ ज्ञान है, अतः कभी भी जा सकता है, जबकि कर्म के क्षय से प्राप्त आत्मगुण कभी भी जाते नहीं हैं, वे हमेशा स्थायी रहते है ।
- व्रत-नियम ग्रहण कर जो व्रत पालन के लिए प्रयत्नशील हैं, फिर भी भूल से कभी नियम का भंग हो जाता है, तो उसे थोडा प्रायश्चित्त आता है, परंतु जो प्रमाद के वशीभूत होकर नियम का स्वीकार ही नहीं करता है, उसे बडा प्रायश्चित्त आता है ।
- अज्ञानता और पराधीनता के कारण तिर्यंचों में आध्यात्मिक शक्ति का विकास संभव नहीं है ।

- तीर्थंकर आदि विशिष्ट महापुरुषों के योग से हाथी, सांप आदि प्राणियों को बोध हो भी जाय तो भी उनकी संख्या बहुत ही अल्प है ।
- परमाधामियों की अत्यंत पीड़ा, मरणांत उपसर्ग और देव-गुरु-धर्म के बाह्य निमित्तों का अभाव होने से नारक के जीवों को आध्यात्मिक शक्तियों का विकास संभव नहीं है ।
- दिव्य सुखों की आसक्ति-ममता और भोग में मग्नता आदि के कारण देवलोक में रहे देवताओं को आध्यात्मिक शक्ति का विकास संभव नहीं है ।

- तीर्थ यात्रा संसार सागर से तिरने के लिए है, जब कि अज्ञानी लोग तीर्थों में जाकर भी संसार के सुखों की मांगकर संसार में डूबने का ही काम करते हैं ।
- छह खंड को जीतनेवाला भी अंतरंग शत्रु के आगे हार खा जाता है ।

अंतरंग शत्रुओं को हराने की बात तो दूर रही, दुर्भाग्य है कि हम अंतरंग शत्रुओं को पहिचान भी नहीं पा रहे है । उन शत्रुओं को भी हमने मित्र मान लिया है ।

- आर्यदेश में लग्न व्यवस्था वासना के पोषण के लिए नहीं, बल्कि वासना के नियंत्रण के लिए है ।
- व्रत नियम तो आत्मा के लिए लक्ष्मण रेखाएं है । लक्ष्मण रेखा के भीतर सीता सुरक्षित थी, लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन किया तो सीता का अपहरण हुआ ।
- Head, Hand and Heart में पवित्रता नहीं, वह मानव कहलाने के लिए लायक नहीं । बुद्धि में सरलता, हाथों में नीतिमत्ता व हृदय में करुणा होनी चाहिये ।

- जिस संबंध को जोडने में ज्यादा राग किया, उस संबंध के टूटने पर उतना ही ज्यादा दु:ख होता है ।
- सिद्ध पद ही एक ऐसा पद है, जिसे प्राप्त करने के बाद उसे छोडना नहीं पडता है । बाकी तो दुनियां में जितने भी पद है, मौत के बाद उन पदों को छोडना ही पडता है ।
- सम्यग्दृष्टि के अवधिज्ञान का उपयोग स्व-पर कल्याण के लिए होता है, जबकि मिथ्यादृष्टि के विभंग ज्ञान का उपयोग स्व-पर अनर्थ के लिए ही होता है ।
- अपने में दोष रहे हुए हैं, इसलिए दूसरों में दोष दिखाई देते है । गुणवान को सर्वत्र गुण की दिखाई देते है ।

- पापी की उपेक्षा करो, किंतु घृणा नहीं । जो ज्यादा पापी हैं, वह ज्यादा दया पात्र है ।
- किसी पर क्रोध करके हम अपने जीवन में नए दुश्मन को ही पैदा करते है और क्षमाकर मित्र ही बढाते है ।
- तत्त्वार्थ ग्रंथ के रचियता पू. उमास्वातिजी प्रायः करके 10 पूर्व के ज्ञाता थे । वे अपनी माता-पिता की इकलौती एक ही संतान होने से उनके माता-पिता का नाम मिलाकर ही उनका नाम रखा गया ।

- उमास्वातिजी महाराज ने तत्त्वार्थ सूत्र में द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग और चरणकरणानुयोग का समावेश किया है ।
- 14 राजलोक प्रमाण ऊँचाईवाला यह विश्व सबसे नीचे व्यास में 7 राजलोक प्रमाण है और मध्य में मात्र एक राजलोक प्रमाण है ।
- 10 पूर्व का ज्ञान, जिसके पास है, वे महात्मा निश्चय से ही सम्यग्दृष्टि होते है ।
- मेरु पर्वत सभी दिशाओं के लोगों के लिए उत्तर में है । चाहे वे भरतक्षेत्र में हो, ऐरावत में हो या महाविदेह में हो ।

- पूरे विश्व में मूल रंग तो मात्र पांच ही है–लाल, काला, सफेद, पीला और नीला । इन्ही पांच वर्ण के भगवान होते है ! ये पांच प्राकृतिक वर्ण है...नवपद की आराधना में भी इन्हीं पांच रंगों का ध्यानादि है ।
- दिगम्बर और श्वेताम्बरों में मुख्य दो भेद है 1) स्त्री की मुक्ति और 2) केवलज्ञान के बाद भोजन । इन दोनों को दिगम्बर संप्रदाय नहीं स्वीकार करते है ।
- श्वेताम्बर मत के अनुसार सर्वप्रथम मोक्ष जाने वाली मरुदेवी माँ स्त्री ही थी । प्रत्येक तीर्थंकर के जितने साधु मोक्ष में गए हैं, उससे दुगुनी संख्या में साध्वीजी मोक्ष में गयी हैं ।

- भगवान महावीर ने साधना काल के 12.5 वर्ष में 11.5 वर्ष से अधिक उपवास किये थे । परन्तु केवलज्ञान के बाद नित्य एकासना करते है । मात्र अंतिम समय में छट्ठ तप किया था ।
- सभी केवली, केवलज्ञान के बाद भोजन करते है, जिसका कारण है, कि अभी सत्ता में अघाति-वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र कर्म रहे हुए है । क्षुधा की वेदना, वेदनीय कर्म अधीन है ।
- जैन दर्शन को समझने के लिए तत्त्वार्थ सूत्र एक सर्वश्रेष्ट ग्रंथ है । जैन दर्शन की यह चाबी है ।

- हम श्वेताम्बर 45 आगम को स्वीकार करते है, दिगम्बर आगम को नहीं मानते, स्थानकवासी मत ने, जिन आगमो में जिनपूजा का उल्लेख था, उनको अस्वीकार कर मात्र 32 आगम को माना । उनमें से निकले तेरापंथ ने अविरतिधर को दान देने में पाप मानकर अनुकंपा दान को छोड़ दिया ।
- कारिका से शुरूआत हुए इस ग्रंथ में कहा है, जिन आत्माओं को सम्यग्दर्शन और ज्ञान प्राप्त किया है, उसने दुःख के निमित्त वाले इस जीवन को सफल बना दिया है ।
- प्रवचन, परमात्मा की वाणी है, इसलिए प्रवचन में स्थापना रूप परमात्मा को स्थापित करना जरुरी है ।

- स्थापनाचार्य में देव और गुरु दोनों की स्थापना की गई है । इनके सन्मुख चैत्यवंदन भी हो सकता है और गुरुवंदन भी ।
- तप, त्याग, साधना, वैराग्य तो सभी धर्मों में है, परन्तु द्रव्यानुयोग की जो बातें, जैन दर्शन में है, वे किसी अन्य दर्शनों में नहीं है ।
- जहाँ पर भगवान की दृष्टि होती है, उस क्षेत्र की आबादी होती है ।
- भगवान के पास रत्नत्रयी की प्रार्थना करने के लिए परमात्मा को 3 प्रदक्षिणा देनी चाहिए ।

- रत्नत्रयी की आराधना भवसमुद्र से मोक्ष में जाने हेतु नाव के समान है ।
- सभी गणधर भगवन्त भिन्न-भिन्न द्वादशांगी की रचना करते हैं, उनमें शब्द का भेद जरुर होता है, अर्थ का भेद नहीं होता है ।
- तीर्थंकर भगवान नए मत की स्थापना नहीं करते है, परन्तु जो पूर्व में हुए तीर्थंकरो ने जो बताया उन्हें ही पुनः स्थापित करते है ।
- कोई हमारे साथ हिंसादि व्यवहार करे, तो उसे हम पाप मानते है, परन्तु हम जो पाप करते है, उसे पाप रूप नहीं मानते है ।

- संसारी जीवों के 6 भाग किए है-अधमाधम, अधम, मध्यम, विमध्यम, उत्तम, उत्तमोत्तम ।

  1) जिसने इस लोक और परलोक दोनों को बिगाड़ा वे अधमाधम ।

  2) जिसने इस लोक को सुधार कर परलोक को बिगाड़ा वे अधम ।

  3) जिसने इस लोक को सुधारा और परलोक को भी सुधारा वे विमध्यम ।

  4) जिसने इस लोक की परवाह किये बिना परलोक को सुधारा वे मध्यम ।

  5) जिसने परमलोक (मोक्ष) के लिए प्रयत्न किया वे उत्तम ।

6) जो खुद तो भव संसार तरते ही है, अपने उपदेश से अनेक को तारते है, वे उत्तमोत्तम कहलाते हैं ।

- लोग कहते है, भगवान महावीर ने 22 तीर्थंकरो के शासन में रहे 4 महाव्रतों के स्थान पर 5 महाव्रत बताए, यह एक क्रांतिकारी कदम था, परन्तु जैन शासन इसे क्रांति नहीं कहता, क्योंकि उन्होंने मात्र 5वें महाव्रत का विस्तार किया है ।
- तीर्थंकर श्री संघ की स्थापना करते है, शिष्य बनाते है, परन्तु वे उनका योगक्षेम नहीं करते है, योगक्षेम का कार्य गणधर आदि छद्मस्थ आचार्य करते हैं ।

- सांप से तो मात्र एक भव में नुकसान होता है, परन्तु पाप से भवोभव का नुकसान होता है ।
- सबको सांप का भय है, पाप का भय किसी को नहीं । इसी कारण आज जीवन में अनेक प्रकार के पापाचरण बढे है ।
- हिंसादि चार पापों को हम पाप जरूर मानते है, परन्तु परिग्रह पाप है यह बात स्वीकार करने के लिए कोई जल्दी तैयार नहीं होता ।
- अन्य धर्म अन्याय-अनीति को पाप मानते है, परन्तु जैन धर्मानुसार न्याय नीति का धन रखना भी पाप है । इसलिए अठारह पापस्थानक में धनको पांचवें परिग्रह रूप पाप में गिना है ।

- श्री शांतिनाथ, कुंथूनाथ और अरनाथ भगवान चक्रवर्ती थे इसलिए हम उनकी पूजा नहीं करते, परन्तु उन्होंने छह खंड का त्याग किया था इसलिए पूजा करते है ।
- साधु जीवन में परिग्रह पाप का सर्वथा त्याग है, परन्तु श्रावक को धन के सर्वथा त्याग का व्रत नहीं बताकर परिग्रह के परिमाण का व्रत बताया है ।
- प्राणातिपात अर्थात् 10 प्राण (5 इन्द्रियाँ, 3 बल, श्वासोश्वास और आयुष्य) का अतिपात अर्थात् नाश करना ।
- जिनवाणी का श्रवण नीचे बैठकर करना चाहिए । कुर्सी आदि पर बैठकर प्रवचन सुनना अपवाद मार्ग है ।

- छह काय के असंख्य जीवों की हिंसा के बिना एक बार की रसोई नहीं बनती है । श्रावक जीवन में हिंसा के बिना जीवन नहीं, तो परिग्रह के बिना भी जीवन नही है ।
- जो त्याग करता है, उसको मान दिया जाता है, जो मात्र संग्रह करता है, उसको शासन में कोई मान नहीं है । जैन शासन में सर्वोच्च त्याग करने वालों को सर्वाधिक मान दिया जाता है ।
- तीर्थंकर भगवान जन्म से ही वैरागी होते हैं । कुछ जीवों को प्रेरणा देने पर वैराग्य होता है । परन्तु कुछ पत्थर हृदयी लोगों को तो कुछ भी हो जाए, वैराग्य आता नहीं है ।

- जगत् में मध्यम कक्षा के जीव सबसे ज्यादा होते हैं । अधम और उत्तम कक्षा के जीव हमेशा कम होते हैं ।
- राजा विक्रमादित्य के प्रतिबोधक श्री सिद्धसेनदिवाकरसूरिजी द्वारा रचित संमति तर्क ग्रंथ, एक बहुत बड़ा दार्शनिक ग्रंथ है ।
- इंदिरा गांधी ने अपने शासन में गर्भपात को प्रोत्साहन दिया, जिसके फलस्वरुप वह अपने ही रक्षकों द्वारा मारी गई ।
- हिटलर ने अपना बदला लेने के लिए सत्ताधीश बनने के बाद 60 लाख यहूदिओं को मौत के घाट उतारा था ।

- याकिनि-महतरा-सूनु हरिभद्रसूरीश्वरजी ने ''समराइच्च'' कहा में जीवों के 3 भेद भी अलग प्रकार से बताए ।

  1) कुछ जीव जो उत्तम है, वे स्वयंभू प्रेरित होते है । उन्हें प्रेरणा की जरुरत नहीं होती है ।

  2) कुछ जीव मध्यम है, जो प्रेरणा की गरज रखते है, प्रेरणा मिलने पर वे आगे बढ़ते हैं ।

  3) कुछ अधम जीव है जिन्हें चाहे जितनी प्रेरणा दी जाए, कोई परिवर्तन नहीं होता है ।

- बाह्य साधनों से शांति मिलने वाली नहीं है, शांति तो समता की साधना से ही मिलती है ।

- कुमारपाल के स्थान पर राजा बनने वाला अजयपाल, कुमारपाल का भतीजा था, परन्तु विपरीत विचारधारा के कारण उसने कुमारपाल राजा के सर्जन को नष्ट करने का कार्य किया था ।
- भगवान महावीर ने 18वें त्रिपृष्ट वासुदेव के भव में शय्यापालक के कान में गर्मागर्म शीशे का रस डलवाया था, उस पाप का उदय 27वें भव में आया, जिस भव में कोई पाप नहीं किया था, फिर भी उनके कान में कीले ठोके गए ।
- चर्म चक्षु द्वारा हम मात्र इस जीवन को ही देख सकते है, परन्तु ज्ञान चक्षु से हम हमारे गत भव को जानकर भविष्य को सुधार सकते है ।

- अन्य धर्मों में मात्र काया से होने वाले पापों को पाप के रूप में स्वीकार किया जाता है, परन्तु जैन शासन में पाप के 9 प्रकार बताए है । मन, वचन और काया से और करण, करावण और अनुमोदन से ।
- स्वयंभू-रमण नाम के अंतिम समुद्र में पैदा होने वाले 1000 योजन के लम्बे मत्स्य के आंख की पलकों पर पैदा होने वाला तंदुलीय मत्स्य मात्र अंतर्मुहूर्त जीवन जीता हैं, कोई विशेष हिंसा नहीं करता है फिर भी मात्र मानसिक पाप से वह मरकर 7वीं नरक में चला जाता है ।

- हमारे जीवन में काया और वचन के पाप तो अल्प होते है, परन्तु मन के, पाप तो बिना किसी की प्रेरणा से सहज हो जाते हैं ।
- इस भव में यदि अनूकुलता का राग और प्रतिकूलता का द्वेष किया तो परलोक बिगड़ सकता है, लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती है ।
- मन से किये हुए पापों की सजा सबसे बड़ी होती है ।
- चार की हत्या करने वाला दृढ़ प्रहारी प्रायश्चित्त करके मोक्ष में गया । हिरणी और हिरणी के गर्भ की हत्या करने वाले श्रेणिक राजा पाप का पश्चाताप न होने से मरकर पहली नरक में गये ।

- अनंत की भवयात्रा का अंत लाने का मार्ग परमात्मा ने बताया है । चारों गतिओं में मात्र मनुष्य गति में ही परमात्मा की समस्त आज्ञाओं का पालन करना शक्य है ।
- समुद्र में सर्वत्र खारा पानी होता है, परंतु एक श्रृंगी मत्स्य समुद्र में भी मीठा जल ढुंढकर उसका पान करता है ।
- जन्म मरण के रोग से जो आत्माएँ कंटाल चुकी है, उसी को मोक्ष की इच्छा हो सकती है ।
- जब तक संसार से निर्वेद-कंटाला नहीं है और मोक्ष प्राप्ति की तीव्र इच्छा नहीं है तब तक परमात्मा की सच्ची भक्ति नहीं हो सकती है ।

- विक्रम सं. 2014 के आस-पास अमेरिका के विदेश मंत्री डेलेस को cancer हुआ था । उसने घोषणा की–यदि मेरा रोग कोई मिटा दे, तो उसे लाखों डॉलर का इनाम दूंगा । परन्तु कोई भी उसके cancer को मिटा न सका और वह दुर्ध्यान में मर गया । धन की शक्ति पर जीने वाले, उन्हे जीवन में समाधि कहा से ।

  उसी पं.श्री पद्मविजयजी को भी cancer हुआ था । उस cancer की वेदना में उन्होंने मासक्षमण का तप किया और धर्म के सहारे अंतिम समय भी अत्यंत समाधि प्राप्त की ।

- सभी जीवों के संसार का अंत शक्य नहीं है, परन्तु हमारी आत्मा के भवों का अंत हमारे लिए शक्य है, जिसके लिए परमात्मा की आज्ञा ही एक मात्र उपाय है ।
- जगत में हर जगह पाप है, परन्तु उस पाप और भोग सुखों के बीच भी श्रृंगी मत्स्य समान भगवान के शासन को पाये हुए साधु-साध्वीजी भोग-विलास का त्याग कर परमात्मा के मार्ग पर चलते हैं ।
- पूज्य उपाध्याय श्री विनयविजयजी महाराज द्वारा लिखित शांत सुधारस ग्रंथ में कहा है जिसे भवभ्रमण का खेद पैदा हुआ हो, उसे ही ये अनित्य आदि सोलह भावनाएँ पसंद आएगी ।

- हाँ, आराधना का प्रवेश द्वार दान धर्म ही है, वहां से चढ़ते चढ़ते भाव धर्म तक पहुँचना है ।
- यदि दृष्टि खुल जाए तो–
  दुनिया में होने वाली हर घटना, आत्मा को जगाने वाली होती है ।
- देवलोक में वैराग्य दुर्लभ है, मनुष्य में सुलभ है क्योंकि देवलोक में अकाल मृत्यु या मृत्यु के बाद देह की अंतिम क्रियाएं नहीं है ।
- वैसे तो 12 भावनाएँ वैराग्य का कारण है, फिर भी प्रारम्भ की 6 भावनाएँ प्रबल वैराग्य का कारण है ।

- संसार के सुख से पराड़ मुख बना हुआ और ही मोक्ष के सन्मुख बना हुआ अपनी प्रगति कर सकता है ।
- संसार में सभी पौद्गलिक वस्तुएँ नाशवंत है । नित्य मात्र आत्मा है । दुनिया में जिसका सर्जन है, उसका नाश है ।
- संसार में आसक्त जीव एक जगह सबको हँसाता है और अन्य स्थान पर सबको रुलाता है । स्वजन की मृत्यु के समय में सब रोते है और जन्म के समय में मिटाई बांटी जाती है ।
- मानवीय मन पर द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव और भव का असर जरुर पडता है ।

- अपना मन, अपमान को सहन कर सकता है, परन्तु सन्मान को समतापूर्वक सहन करना अत्यंत कठिन है ।
- साधु जीवन के 22 परीषहों में प्रतिकूल उपसर्गों की तरह अनुकूल उपसर्गों का भी समावेश होता है ।
- उत्तम निमित्त मिलने पर भी अधम आत्माएँ सुधर नहीं सकती तो महान आत्माएँ हल्के निमित्तों से भी नहीं बिगड़ती है ।

  उदा. काल सौरिक कयाई और स्थूलभद्र ।
- अपनी आत्मा को या तो हम स्वयं अनुभव सकते है अथवा पूर्ण ज्ञानी सर्वज्ञ जान सकते है ।

- साधु जीवन में पुण्यबंध की प्रवृत्ति का निषेध है, सभी आराधनाएँ निर्जरा प्रधान है । जबकि श्रावक जीवन में पुण्यबंध की प्रधानता होने से दान आदि करना कर्त्तव्य है ।
- दुनियाँ को देखना बंद होने पर आत्मा और परमात्मा को देख सकते है ।
- पू.आ. श्री भद्रसूरि म.सा. की आँखों की रोशनी चली गई परंतु उनके पास Positivity दृष्टि थी अतः बोले, 'अब तक मैं बाहर की दुनियाँ देखता था, अब भीतर की दुनिया देखूंगा ।'
- ध्यान के लिए चित्त की एकाग्रता जरुरी है ।

- नवकारशी का पच्चक्खाण भी भावपूर्वक हो जाए, तो वह मोक्ष देने में समर्थ है ।
- सामने वाला अप शब्द बोलता है, उसमें हमें कोई असर नहीं होता है । असर तब होता है, जब अप शब्द को हम मन पर लेते है ।
- ध्वंस बहुत आसान है मगर निर्माण कठिन है ।
  पतन बहुत आसान है मगर उत्थान कठिन है ।
- दुनियाँ में शुभ-अशुभ दोनो निमित्त है, शुभ की असर बहुत कम होती है ! परंतु अनादि काल के कु संस्कार के कारण अशुभ की असर खुब ज्यादा होती है ।

- अनशन के दो भेद-इत्वर कथित = Temporary और यावत कथित = Permanent । नवकारशी भी इत्वर कथित अनशन तप है ।
- ''मनानात् त्रायते इति मंत्र ।'' मन को Control करने वाला मंत्र है । सर्व श्रेष्ठ मंत्र नवकार महामंत्र है ।
- मनुष्यगति दुर्लभ है । उसमें वापिस संपत्ति का योग दुर्लभ है । उसमें भी सुकृत करने की भावना और सुकृत करना अत्यंत दुर्लभ है ।
- सर्व कालीन जीवन मात्र सिद्धों को है ! वे कभी मरते नहीं है ! बाकी संसारी जीवों को अवश्य मरना पडता है ।

- सुकृत की अनुमोदना उपबृंहणा है, अनुमोदना नहीं करना अनुपबृंहणा है ! जो समकित का एक अतिचार है ! वीशस्थानक की आराधना में सुकृतों की अनुमोदना हैं ।
- हमें अजन्मा बनने के लिए प्रयत्न करना है ।
- जगत के सारे जीवों को मरना ही पडता है । 17 प्रकार के मरण उत्तराध्ययन सूत्र में बताए है, उनमें सर्वश्रेष्ठ मरण (समाधि मरण) पंडित मरण है ।
- इस संसार मे सभी जीवों की प्रबल इच्छा जीवन जीने की है ।
- मृत्यु पर विजय दिलाने वाला नवकार महामंत्र है ।

- 1. इह लोक भय = मनुष्य को मनुष्य से भय ।
  2. परलोक भय = मनुष्य को पशु आदि से भय !
  3. आकस्मिक भय = Accident का भय !
  4. अपयश भय=शुभ कार्य करने पर भी यश मिलेगा या नहीं उसका भय ।
  5. आजीविका भय = जीवन व्यवहार चलाने का भय !
  6. आदान भय = चोरी का भय !
  7. मृत्यु भय = सबसे बडा मौत का भय !
- परमात्मा के कीर्तन, मनन, जाप, पूजनादि सभी का फल समाधि मरण है ।

- हमें आने जाने के लिए कुमूर्ता बाधक है, मृत्यु को आने में कोई कुमुर्ता बाधक नहीं है ।
- **Live as you have to die today.** जीवन ऐसा जीओ कि तुम्हें आज भी मरना कबूल है ।
- विदेश-प्रदेश जाने के लिए हमारे पास **Passport** होता है, फिर हम तैयारी करते है । परंतु परलोक का **Passport** हमारे पास नही होते हुए भी हम कोई तैयारी नहीं करते है ।
- हम कहाँ से आए और कहाँ जाएंगे, इसका पता नहीं है ।

- मृत्यु को टाला नहीं जा सकता परंतु सुधारा जा सकता है ।
- दुनिया के लोग मृत्यु को खराब मानते है, परंतु जैन धर्म मृत्यु को **Welcome** करने की बात करता है ।
- सिद्धर्षि गणी ''दीक्षा के पूर्व बडे जुआँरी थे परंतु जीवन परिवर्तन होने पर कहते है मुझे इस संसार में खुशी नहीं है ।''
- **Football** का मैदान तो एक है, खिलाडी 22 है, जिस खिलाडी के पास **Ball** आती है, वह **Kick** लगाता है ! मैदान में **Ball** की कोई **fix** जगह होती नहीं उसी प्रकार अनंत काल के कर्म हमें **Kick** लगाते है और हम इस संसार में कहीं चले जाते हैं ।

- नवकार के स्मरण में प्राण जाए तो वह अवश्य वैमानिक गति होता है ।
- आत्मा को परमात्मा बनाने का उपाय वीशस्थानक की आराधना है ।
- जीवन में एक व्यसन आने पर दूसरे व्यसन भी खीचकर चले आते है ! जीवन बर्बाद हो जाता है ।
- अयोग्य व्यक्ति को दिया गया उपदेश व्यर्थ जाता है, परंतु योग्य व्यक्ति को तो मात्र एक वचन भी पर्याप्त है ।

- संसार चाहे जितना खराब हो उसका कोई भय नहीं बताता है, और संयम के स्वीकार की बात आने पर लोग संयम को खूब कष्टप्रद बताते है ।
- संयम जीवन में शारीरिक कष्ट खूब है लेकिन मन की शांति है ।
- संसारी जीवन में शारीरिक कष्ट को मिटाने हेतु साधन है, परंतु मानसिक शांति नहीं है ।
- विद्वान व्यक्तिओं के लिए ज्ञान ही धन है ।
- धनवान मात्र अपने क्षेत्र में पूजा जाता है, राजा अपने राज्य मात्र में पूजा जाता है, परंतु साधु सभी जगह पर पूजे जाते है ।

❋ देह के कष्ट तो तिर्यंच और नरक में अनंती बार सहे है ! उसके सामने धर्म के कष्ट कुछ भी नहीं है ।

❋ धर्म को समझा हुआ जीव, शारीरिक कष्टो से नहीं डरता है ! वह हंसते मुंह सहन करता है ।

❋ यदि जीवन में सच्चा धर्म हो तो सारी आपत्तियाँ दूर हो जाती है ।

❋ संयम जीवन कष्टप्रद है, परंतु मानसिक समाधान होने से जीवन में परम शांति है ।

❋ धर्म में स्थिरीकरण करना सम्यग् दर्शन का भेद है ।

❋ सिद्धर्षि गणी कहते है, हे प्रभु ! संसार के पार को प्राप्त आपको देखने के बाद इस संसार में मुझे कही भी राग नहीं है ।

❋ संसारी जीव का सबसे बड़ा दु:ख जन्म है, जन्म है इसलिए मरण है ! भगवान अजन्मा बने है और अजन्मा बनने का मार्ग बताने वाले है ।

❋ जीव मात्र की सारी इच्छा का एक में समावेश हो जाता है, 'मुझे सुख मिले और मेरा दु:ख दूर हो !'

❋ संसारी जीव हमेशा सुख पाना चाहता है और पूर्ण सुख चाहता है, परंतु संसार में ऐसा सुख है ही नहीं ।

- मोक्ष का सुख अनुपमेय है । जिसको किसी से उपमा नहीं दी जा सकती है ।
- अरिहंत परोपकार के भंडार है, तो सिद्ध सर्वोच्च सुख के भंडार है ।
- समुद्र का पानी हर जगह खारा ही होता है ।
  नीम का पत्ता हर जगह कडवा ही होता है ।
  उसी तरह संसार का हर सुख, दु:ख रूप, दु:ख फलक और दु:ख की परंपरा वाला है ।

- नहीं बुलाने पर भी सहाय करने वाले भगवान अकारण वत्सल है ।
- अंतर में थोडी भी योग्यता हो तो भगवान के संपर्क से वह योग्यता खिलती है ।
- जीवन की अंतिम क्षण में भी परमात्मा की शरण स्वीकारने वाले, दुर्गति से सद्गति में चले गए तो जीवन के प्रारंभ से शरण स्वीकार करने से क्या हमारी सद्गति नहीं होगी ?
- नवकार में दूसरे पद के मात्र 5 अक्षर है, सबसे छोटा पद होने पर भी जो संपत्ति इस पद में है, वह अन्य किसी में नहीं है ।

- सभी पदों की आराधना का एक मात्र लक्ष्य सिद्ध पद पाना है ।
- भगवान के समान ही भगवान की वाणी रूप श्रुतज्ञान का सम्मान करना है । वाणी के अक्षर और लिपी भी वंदनीय है । और उनकी आशातना करने से भी पाप लगता है ।
- अरिहंतादि पंच परमेष्ठी के 108 गुण तो मात्र स्थूल दृष्टि से है, बाल जीवों को समझाने के लिए है, बाकि एक मात्र अरिहंत के समस्त गुण का वर्णन कभी हो नहीं सकता है ।

- अनादि काल से हमारी आत्मा में एक मात्र स्वार्थ भाव होने से हमें परमार्थ का भाव नहीं आता है ।
- हमारे सुख की इच्छा स्वार्थ भाव है, जगत के सभी जीव सुखी हो, यह इच्छा परमार्थ भाव है । सभी के सुख में अपना सुख ही आ जाता है ।
- सुख-दु:ख की अनुभूति जीव को होती है, जड पदार्थ में सुख-दु:ख दोनों नहीं होते हैं ।
- संसार की सभी आत्माएँ दु:खी है और इस दु:ख से मुक्ति एक मात्र मोक्ष में है । मोक्ष का मार्ग बताने वाले अरिहंत है इसलिए अरिहंत परमोपकारी है ।

- अरिहंतों की पूजा करने से हमारे मन में रहा स्वार्थ भाव दूर होता है और परमार्थ भाव पैदा होता है ।
- सिद्ध भगवंत अक्षय सुख के भंडार है ।
  जगत में सभी वस्तुओं का अंत है, परंतु सिद्ध भगवंतो के सुखों का कोई अंत नहीं है ।
- परमात्मा का शासन आचार्य से प्रारंभ होता है आचार्य से ही अंत होता है और चलाते भी आचार्य ही है ।
- आचार्य सदाचार के भंडार है-पाले-पलावे पंचाचार !

- उपाध्याय विनय गुण के भंडार है,
  ज्ञान की प्राप्ति के लिए विनय गुण मुख्य है ।
- उपाध्याय भगवंत की आराधना से हमारा अज्ञान दूर होता है ।
- सभी गुणों के लिए विनय गुण लोह-चुंबक समान है ।
- ''पात्रे आयान्ति संपदः'' योग्य व्यक्ति के पास संपत्ति सामने से आती है और अयोग्य को मिली संपत्ति भी चली जाती है ।
- योग्यता प्राप्त करने के लिए विनय गुण जरुरी है, जो झुकता है वही पाता है ।

- ''मा रुष: मा तुष:'' = अनुकुलता में राग नहीं करना और खुश नहीं होना, प्रतिकूलता में द्वेष नहीं करना, शोक नहीं करना !
- गलती के स्वीकार से गलती बढती नहीं हैं, परंतु गलती के अस्वीकार में वह गलती बढ़ती है ।
- भूल सुधारने का सर्वश्रेष्ठ उपाय, भूल सुधारने वाले को उपकारी मानकर भूल का स्वीकार करना है ।
- केवली और श्रुतकेवली की देशना एक समान होती है, परंतु ज्ञान में सिन्धु-बिन्दु जितना अंतर है ।
- कषाय का मुख्य कारण पांच इन्द्रियों के विषय की अभिलाषा है ।

- संसार में जीव विषय और कषाय के पीछे दौडता है ! 5 विषय और 4 कषाय ।
- एक इच्छा की पूर्ति होने पर दूसरी इच्छा पैदा होती है और अपूर्ति में क्रोधादि कषाय पैदा होते है ।
- समुद्र, जल से कभी तृप्त नहीं होता,
  अग्नि, ईन्धन से कभी तृप्त नहीं होती, वैसे ही
  लोभी का मन, इच्छा पूर्ति से कभी तृप्त नहीं होता !
- चक्रवर्ती-छह खंड के राज्य के त्याग किए बिना मरे तो अवश्य ही 7वीं नरक में जाता है और त्याग करे तो देव अथवा सिद्ध बनता है ।

- बाहर के त्याग की कोई विशेष कीमत नहीं है, क्योंकि जब तक भीतर से त्याग नहीं होगा, तब तक लालसाएं बाहर आए बिना नहीं रहेगी ।
- संसारी जीवन में सबसे ज्यादा आकर्षण नाम और रूप का होता है । जीवन में नाम और रूप दोनो छोड़ने जैसे है ।
- संयम जीवन अर्थात् विषय और कषाय को जीतने की साधना !
- जिस आत्मा को वैराग्य नहीं होता हो उसे अशुचि भावना का चिंतन करना चाहिए । शरीर के भीतर जो है, उसे बाहर निकालने पर उसके सामने देखने का भी मन नहीं होता है ।

- काम, क्रोध, लोभ । इन तीनों के बीच में क्रोध है । काम और लोभ दोनों क्रोध को बढ़ाने वाले है ।
- हमें सौंदर्य पसंद है, परंतु यह शरीर अशुचि के स्वभाव वाला है । कितना ही स्वच्छ करो वह कुछ क्षण बाद फिर से गंदा होगा ही !
- काया को भूखा रखना आसान है, परंतु पांच इन्द्रियां और मन को भूखा रखना सबसे कठिन है ।
- नवकार महामंत्र सभी शत्रुता का नाश करता है ।
  शत्रुता = अंदर का वैर ।

- संयम जीवन में सरलता है, जिसके हृदय में सरलता होगी, वही अपनी भूल स्वीकार कर सकता है, बाकी जब तक जीवन में सरलता नहीं आएगी तब तक भूल सुधारी नहीं जा सकती है !
- इस संसार में सारभूत मात्र पदार्थ यदि कोई हो तो वे पंच परमेष्ठी ही है ।
- पंच परमेष्ठी को नमस्कार करने से 5 प्रकार के संसार का नाश होता है ।
  1) स्वार्थमय 2) दु:खमय 3) असदाचारमय 4) अज्ञानमय 5) विषय कषायमय संसार !

- तीन जगत में जिसे कोई उपमा दे सके, ऐसा कोई पदार्थ नहीं है, वैसा नमस्कार महामंत्र है ।
- गौशाले के मन में भगवान के प्रति शत्रुता थी, परंतु भगवान के मन में किसी जीव के प्रति शत्रुता नहीं थी ।
- भयंकर से भयंकर जहर भी नवकार महामंत्र के प्रभाव से निष्फल हो जाता है ।
- हम तो मात्र सभी जीवों के सुख की कामना कर सकते है, परंतु भगवान में तो सभी जीवो को सुखी बनाने की शक्ति होती है ।

- जो नाव का आश्रय लेकर उसे समर्पित रहते है, उसे नाव नदी पार कराती है, वैसे ही भगवान को समर्पित आत्मा को भगवान भव समुद्र से पार उतारते है !
- नवकार महामंत्र संसार का उच्छेद करने में समर्थ है ।
- नवकार के प्रभाव से श्रीमती के लिए सांप भी फूल की माला बन गया था ।
- नवकार - कर्म को निर्मूल करने का मंत्र है ।
  इस 14 राजलोक की दुनिया में हमारी आत्मा कर्म के बंधनों के कारण भटक रही है, इन बंधनों का नाश करने वाला नवकार मंत्र है ।

- इच्छा योग, शास्त्र योग और सामर्थ्य योग का नमस्कार बताया है । सामर्थ्य योग का एक भी नमस्कार, सारे पापों का नाश करने में समर्थ है ।
- दुनियाँ में अनेकानेक सिद्धियाँ है, नवकार सभी सिद्धियों को देने वाला है ।
- सिद्ध भगवंतों से निर्लेप भाव की मांग करनी चाहिए ।
- केवलज्ञान को देनेवाला नवकार मंत्र है ! यह निर्वाण मंत्र है । अर्थात् जन्म का नाश करने वाला है ।

- भगवान का ध्यान भगवान बनने के लिए करना है, अथवा भगवान को हमारे भीतर स्थापित करके उनका ध्यान करना चाहिए ।
- आज्ञा चक्र - में श्वेत वर्ण से अरिहंतों का ध्यान करना चाहिए ।
- अलग-अलग अरिहंत पांचों वर्ण के है, परंतु ध्यान समय अरिहंतो का ध्यान श्वेत वर्ण से करना है ।
- आज्ञा चक्र (भाल) को ज्ञान–केन्द्र भी कहते है ! ज्ञान की प्राप्ति के लिए यहां ध्यान करना चाहिए ।

- सिद्ध भगवंत आत्मिक गुणों से हृष्ट पुष्ट है । सामान्य से हृष्ट पुष्ट व्यक्ति को लाल टमाटर जैसा कहते है, इसलिए सिद्धों का ध्यान लाल वर्ण से करना चाहिए ।
- सहस्त्रार चक्र (शिखा) को दर्शन-केन्द्र भी कहते है । सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए यहाँ ध्यान करना चाहिए ।
- सिद्ध भगवंतों का ध्यान सहस्त्रार चक्र में लाल रंग से करना है ।
- सिद्ध भगवंत निराकार है ! हम निराकार का ध्यान नहीं कर सकते है ! इसलिए हमें ध्यान के लिए आलंबन जरुरी है ।
- आत्मा के भीतर राग-द्वेष हो, तो ही द्रव्य कर्म रूप कार्मण वर्गणा चिपकती है ।

- पानी से भरे गीले नारियल को अखंड निकालना शक्य नहीं है । हमारी आत्मा भी संसार में मार खाती है, कारण अंतर में ममत्व का पानी है !
- नवकार शिव सुख पैदा करनेवाला है ! शिव अर्थात् = मोक्ष ।
- सिद्ध-शिला पर भी कार्मण वर्गणा के पुद्गल है, परंतु सिद्ध भगवंत को वे कर्म चिपकते नहीं है, क्योंकि सिद्धों में ममत्व नहीं है ।
- बाह्य पदार्थों पर जितनी ममता होगी, उतने कर्म हम पर लगते रहेंगे ।

- राग और द्वेष का भाव हमेशा रहने के कारण हमें सतत सात कर्मों का बंध होता है ।
- आचार्य पद का ध्यान विशुद्धि केन्द्र (कंठ) में = पीले वर्ण से करना चाहिए ! आचार्य भगवंतों के ध्यान सदाचार पालन का बल मांगना चाहिए ।
- उपाध्याय भगवंतों का ध्यान अनाहत चक्र (हृदय) में हरे वर्ण से करना चाहिए । उन विनय गुण की प्रार्थना करनी चाहिए ।

- साधु भगवंतों का ध्यान मणिपूर चक्र (नाभि केन्द्र) में काले रंग से करना चाहिए । उनसे वैराग्य गुण की मांग करनी चाहिए ।
- साधु संसार में रहते हुए भी उन्हें संसार का रंग नहीं लगता है । और इसलिए काले रंग से साधु भगवन्त का ध्यान करना चाहिए ।
- जो आत्म लब्धि से अष्टापद की यात्रा करे वह उसी भव में मोक्ष प्राप्त करता है ।

- जिनका ध्यान करते है, हम उनके समान बनते है । पंच परमेष्ठी का स्वरुप हमारे भीतर ही रहा हुआ है । बस कर्म के आवरण के कारण वह प्रकट नही हो तो । इन्हे प्रकट करने के लिए अभ्यास करना चाहिए ।
- जैनो की पंच तिर्थी अर्थात् आबू, अष्टापद, गिरनार, समेत शिखर और शत्रुंजय ।
- काया से नही बल्कि मन से यात्रा करना वह भावयात्रा है । काया से यात्रा करने में जो आनंद नही आता वह आनंद भावयात्रा से आता है ।

# जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न, पू.आ. श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा मुख्यतया हिन्दी भाषा में आलेखित 280 पुस्तकों में से उपलब्ध एवं अवश्य पठनीय साहित्य-सूची

| Sr. No. | पुस्तक का नाम | मूल्य | Sr. No. | पुस्तक का नाम | मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | Pearls of Preaching | 60/- | 42. | New Message for a New Day | 600/- |
| 2. | Panch Pratikraman Sootra | 100/- | 43. | आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें ! | 150/- |
| 3. | अमृत रस का प्याला | 300/- | 44. | इन्द्रिय पराजय शतक | 150/- |
| 4. | ध्यान साधना | 40/- | 45. | दूसरा कर्मग्रन्थ | 55/- |
| 5. | शंका समाधान (भाग-5) | 160/- | 46. | तीसरा कर्मग्रन्थ | 90/- |
| 6. | शत्रुंजय यात्रा | 40/- | 47. | चौथा कर्मग्रन्थ | 140/- |
| 7. | शत्रुंजय की भाव यात्रा | 230/- | 48. | पाँचवाँ कर्मग्रन्थ | 160/- |
| 8. | आओ संस्कृत सीखें भाग-2 | 400/- | 49. | छठा-कर्मग्रन्थ | 210/- |
| 9. | दंडक सूत्र विवेचन | 90/- | 50. | नित्य देववंदन | निशुल्क |
| 10. | प्रवचन का अमृत | 200/- | 51. | संबोह-सित्तरि (वैराग्य का अमृत कुंभ) | 160/- |
| 11. | पर्युषण अष्टानिका प्रवचन | 120/- | 52. | श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम(भाग-1) | 1170/- |
| 12. | गणधर-संवाद | 80/- | 53. | श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम्(भाग-2) | 1040/- |
| 13. | आओ ! उपधान पौषध करें ! | 130/- | 54. | श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम्(भाग-3) | 900/- |
| 14. | श्री नमस्कार महामंत्र | 180/- | 55. | श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम्(भाग-4) | 1270/- |
| 15. | संस्मरण | 50/- | 56. | श्री भद्रंकर प्रश्नोत्तरी | 170/- |
| 16. | आध्यात्मिक पत्र | 60/- | 57. | अध्यात्मयोगी से प्रश्नोत्तर | 160/- |
| 17. | चिंतन का अमृत कुंभ | 80/- | 58. | योग की आठ दृष्टियाँ | 430/- |
| 18. | पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-1) | 210/- | 59. | 10 श्रमण-धर्म | 250/- |
| 19. | पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-2) | 220/- | 60. | साचा माणस बनीए ! (गुजराती) | 300/- |
| 20. | पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-3) | 125/- | 61. | शुभ-संदेश | 250/- |
| 21. | पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-4) | 135/- | 62. | भक्ति से मुक्ति | 200/- |
| 22. | विवेकी बनो | 90/- | 63. | सहनशील बनों (22 परीषह) | 180/- |
| 23. | श्रमण क्रिया के मुख्य सूत्र | 200/- | 64. | आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1 | 350/- |
| 24. | प्रवचन-वर्षा | 60/- | 65. | आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2 | 300/- |
| 25. | आओ श्रावक बनें ! | 25/- | 66. | नवकार-प्रवचन | 180/- |
| 26. | व्यसन-मुक्ति | 100/- | 67. | जीवन-प्रसंग | 360/- |
| 27. | श्रावक जीवन दर्शन | 250/- | 68. | सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव बलदेव | 50/- |
| 28. | महावीर प्रभु की पट्टधर परंपरा 58-80 | 280/- | 69. | समाधि मृत्यु | 80/- |
| 29. | प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह | 80/- | 70. | पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन | 120/- |
| 30. | समाधि मृत्यु | 80/- | 71. | प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह | 80/- |
| 31. | तीन भाष्य | 150/- | 72. | श्रमण-हितशिक्षा | 250/- |
| 32. | आठ कर्म निवारण पूजाएं | 200/- | 73. | हृदय प्रदीप (भाग-1) | 260/- |
| 33. | तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-1 | 200/- | 74. | हृदय प्रदीप (भाग-2) | 260/- |
| 34. | तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-2 | 200/- | 75. | हार्दिक-भावांजलि | 210/- |
| 35. | सज्झायों का स्वाध्याय | 100/- | 76. | हालार-गौरव वज्रसेन-सौरभ | 200/- |
| 36. | कोयंबत्तुर-प्रवचन | 150/- | 77. | आओ ! भाव सामायिक करें ! | 200/- |
| 37. | दक्षिण भारत प्रवचन | 160/- | 78. | चिंतन की चांदनी | 200/- |
| 38. | विविध देववंदन | 100/- | 79. | आओ ! संस्कृत सीखें ! भाग-3 | 360/- |
| 39. | नवतत्त्व विवेचन | 110/- | 80. | आओ ! संस्कृत सीखें ! Guide Book | 270/- |
| 40. | लघु संग्रहणी | 140/- | 81. | नवतत्त्व संग्रह | 1100/- |
| 41. | समाधि की साधना | 300/- | 80. | बिन्दु में सिन्धु | 170/- |

पुस्तक प्राप्ति स्थान : दिव्य सन्देश प्रकाशन C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. M. 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

Kamal PRINTER'S M. 9820530299